गलतियों से फिलेमोन तक

आत्मिक जीवन के लिये नुस्ख़े

पुस्तिका 14

वेद पाठशाला

67, बराक्का रोड, किलपाक,
चेन्नै - 600 010.

Galatians through Philemon
Booklet - 14
Hindi

© IBL
2002

For additional booklets write to

India Bible Literature,
67, Beracah Road, Kilpauk,
Chennai - 600 010.

Ph : 6425166 Fax : 6428298
E-mail : ibl.maa@iblchennai.org

अध्याय १

गलतियों के नाम पौलुस की पत्री

हम ने अब तक जिन पत्रियों पर विचार किया, उन से अलग प्रकार की पत्री है यह, जो पौलुस ने गलतियों के नाम लिखी। गलतियों को पौलुस द्वारा लिखी हुई यह पत्री उत्प्रेरित और बहुत भावात्मक है। ऐसा लगता है कि गलतियों को यह पत्री लिखते समय पौलुस कुछ क्रोधित था। (हमारा यह कहना अधिक सही होगा कि यह पत्री लिखते समय पौलुस धार्मिक क्रोध से भरा हुआ था।) हालांकि पौलुस अकसर अपनी पत्रियों में कलीसियाओं की समस्याओं का जिक्र करता था, तो भी लगता है कि इस अवसर पर वह विशेष रीति से बेचैन था।

उस ने गलतियों के नाम लिखी पत्री में ऐसी एक समस्या का ज़िक्र किया है, जो अधर्मी कुरिन्थियों की समस्याओं की अपेक्षा अधिक गंभीर थी।

धर्मत्याग से संबंधित सुसमाचार

'गलतियों' पढ़ते समय आप को मालूम होता है कि उन विश्वासियों की क्या समस्या थी। पौलुस ने जिस सुसमाचार का प्रचार किया, वह "विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से उद्धार" होने का और उस के साथ और कुछ नहीं मिलाने का सुसमाचार था; परन्तु कलीसिया में याकूब जैसे मसीही यहूदी नेताओं ने गलतियों को पौलुस द्वारा सिखाए गये तत्त्वों में उलट-फेर कर दिया। उन्हों ने उन नए विश्वासियों को सिखाया कि "पौलुस ने जो कहा, वह सच है, परन्तु ख़तना किए बिना और मूसा की व्यवस्था का पालन किए बिना, आप का उद्धार नहीं हो सकता।" उन्हों ने अन्य जातियों से आए हुए मसीही विश्वासियों को यहूदी बनाने का प्रयत्न किया।

स्वतन्त्र सुसमचार

जब पौलुस को इस की ख़बर मिली और जब उस ने यह भी सुना कि गलतिया के कई विश्वासियों का ख़तना भी किया गया, तब उस ने यह भावपूर्ण पत्री लिखी। एक बहुत संक्षिप्त और ठंडे अभिवादन के बाद पौलुस यों लिखता है: "मुझे आश्चर्य होता है कि जिस ने तुम्हें मसीह के अनुग्रह से बुलाया उस से तुम इतनी जल्दी फिरकर और ही प्रकार के सुसमाचार की ओर झुकने लगे। परन्तु वह दूसरा सुसमाचार है ही नहीः पर बात यह है कि कितने ऐसे हैं, जो तुम्हें घबरा देते और मसीह के सुसमाचार को बिगाड़ना चाहते हैं। परन्तु यदि हम या स्वर्ग से कोई दूत भी उस समाचार को छोड़ जो हम ने तुम को सुनाया है, कोई और सुसमाचार तुम्हें सुनाए, तो स्रापित हो जैसे हम पहले कह चुके हैं, वैसा ही मैं अब फिर कहता हूँ कि उस सुसमाचार को छोड़ जिसे तुम ने ग्रहण किया है, यदि कोई और सुसमाचार सुनाता है, तो स्रापित हो।" (गलतियों १:६-९)

यूनानी भाषा में 'स्रापित" के अर्थ में जो शब्द प्रयुक्त किया गया है, वह बहुत अधिक निन्दासूचक और घृणापूर्ण शब्द है। पौलुस ने इतने कठोर शब्द का प्रयोग किसी दूसरी पत्री में नहीं किया है। पौलुस का माना यह है कि "मैं ने आप को जो सुनाया, वही एकमात्र सुसमाचार है। परन्तु मेरे बाद मेरे सुसमाचार-प्रचार की सेवा जारी रखनेवाले लोग दूसरे सुसमाचार का प्रचार कर रहे हैं, जो मुझ से सुनाए गए उपदेश के एक दम विरुद्ध है।"

पौलुस इधर धर्म-त्याग की बात कहता है। हम इस शब्द का प्रयोग व्यवस्था की पुस्तकों में (व्यवस्थाविवरण १३) और "न्यायियों" की पुस्तक में देखते हैं। पौलुस धर्मत्याग के आत्मिक नासूर अथवा कैन्सर को कुरिन्थियों की कलीसिया की किसी भी समस्या से अधिक दूषित मानता है। इसलिए जब पौलुस गलतियों को यह पत्री लिखता है, तब वह अपने द्वारा सिखाए गए स्वतन्त्र सुसमाचार से उन के धर्मत्याग और झूठे उपदेश के सुसमाचार का सामना और खण्डन करता है। इसलिए यह पत्री पौलुस द्वारा प्रचरित अनुग्रह के सुसमाचार का एक असाधारण अद्भुत कथन है। रोमियों, कुरिन्थियों और गलतियों के नाम लिखी पौलुस की पत्रियाँ स्पष्ट और सन्देहरहित रीति से उस सुसमाचार को घोषित करती हैं जिसे यीशु मसीह प्रत्येक व्यक्ति को सौंपा था और जिस का प्रचार पौलुस ने किया था।

स्वतन्त्र प्रेरित

इस पत्री के पहले दो अध्यायों में पौलुस अपने जीवन और सेवा के विषय में कुछ असाधारण दावा करता है। वह दावा करता है कि दमिश्क को जाने के मार्ग में अपने मन-फिराव के बाद, वह अरब देश में तीन साल रहा, उस समय स्वयं यीशु मसीह ने, जो मरे हुओं में से जी उठा है, उसे शिक्षा दी। वह यह भी कहता है कि चौदह साल बाद वह यरूशलेम को गया, और याकूब, पतरस और कलीसिया के अन्य नेताओं ने उसे एक विधिवत् प्रेरित के रूप में मान लिया था। प्रेरितों ने निश्चय किया कि पौलुस अन्य जातियों के बीच में सुसमाचार का प्रचार करेगा और दूसरे प्रेरित यहूदियों को सुसमाचार सुनाएंगे (गलतियों २:७)।

पौलुस ने इस एक ही पत्री को अपने हाथों से लिखा है। दूसरी पत्रियाँ लिखते समय उस के विचारों को लिखने को उस के साथ एक आशुलिपिक होता था, शायद इसलिए कि वह अच्छी तरह नहीं देख सकता था। पौलुस अपने "शरीर में चुभाए गए कांटे" का जो ज़िक्र करता है, शायद उस का एक अंश आँखों की रोशनी की कमी थी (२ कुरिन्थियों १२:७)। शायद गलतियों की हालत से पौलुस इतना परेशान हुआ था कि उस ने अपने आशुलिपिक के आने का भी इन्तज़ार नहीं किया। पौलुस यह पत्री लिखते वक्त बहुत उत्तेजित था क्योंकि उस ने गलतियों के मन-फिराव के समय अनुग्रह का जो सन्देश उन्हें सुनाया था उसे बाद के प्रचारकों ने बदलकर दूषित किया।

कार्य : हम देख सकते हैं कि पौलुस के क्रोध का कारण था उस के सुसमाचार को परिवर्तित करना। गलतियों के नाम की यह पत्री दुबारा पढ़िए और पहले धर्म-त्याग से संबंधित सुसमाचार की और फिर पौलुस से प्रचरित स्वतन्त्र सुसमाचार की व्याख्या कीजिए। इस से आप को पौलुस का सन्देश और मसीह का सुसमाचार समझने में मदद मिलेगी। इस पत्री के पहले अध्याय और 'फिलिप्पियों' के पहले अध्याय की तुलना कीजिए। चूँकि पौलुस कारागृह में बन्द था और वह प्रचार नहीं कर सकता था, दूसरे विश्वासी भाई सुसमाचार का प्रचार करते थे। पौलुस तब आनन्दित होता था क्योंकि सच्चे सुसमाचार का प्रचार किया जा रहा था। इस की तुलना बाद में गलतियों को सुनाए गए दूषित सुसमाचार के प्रति पौलुस के विकारों से कीजिए।

विपरीत कथनों का सुसमाचार

पहले अध्याय में हम ने सीखा कि गलतियों को लिखी पौलुस की छोटी पत्री का विषय है यीशु का सुसमाचार। दूसरे अध्याय में हम उस में ऐसी वर्णन-रीति का प्रकाशन पाते हैं जिस से वह "विपरीत कथनों का सुसमाचार" कहा जा सकता है।

इस में प्रेरित पौलुस का उपदेश पतरस के साथ उस की मुठभेड़ के संदर्भ में दिया गया है। इस का विषय उस समय की सच्ची स्थिति है। जो लोग यीशु के चेले होने के पहले यहूदी थे, वे मन-फिराव के बाद भी अपने यहूदीपन को बनाए रखना चाहते थे।

यरूशलेम में संगठित प्रथम कलीसिया - काउन्सिल या बैठक में यह मामला तय किया जा चुका था। उस में निश्चय किया गया था कि जब तक यहूदी मसीही अपने उद्धार के लिए यहूदी परंपराओं पर भरोसा नहीं करते, तब तक इस में हानि नहीं है कि यीशु के वे यहूदी अनुयायी यहूदी रिवाज़ों का पालन करें। परन्तु यह भी तय किया गया था कि यीशु के अनुयायी, जो अन्य जातियों के थे, वे यहूदी रिवाज़ों का पालन करने को मज़बूर नहीं किए जाएँगे। यहूदी चेलों को साफ़ निर्देश दिया गया था कि अन्यजातियों के विश्वासियों पर यहूदी रस्मों का बोझ नहीं डाला जाए।

परन्तु यरूशलेम की इस बैठक या कार्यकारिणी सभा के बाद भी, यह मामला विवादग्रस्त ही रहा। उदाहरण के लिए, अन्ताकिया की कलीसिया में कई यहूदी और अन्यजाति के विश्वासी थे। वे एक समूह होकर रहते थे और एक साथ रोटी बांटने में भी लगते थे। चूँकि इन में कई मामले भोजन से संबंधित थे, लगता है कि वे दो अलग मेज़ों पर खाना खाते थे। एक मेज़ पर यहूदियों के भोजन-संबंधी नियमों का पालन होता था, दूसरे मेज़ पर ऐसा नियम नहीं था।

जब प्रेरित पौलुस अन्ताकिया पहुँचा, तब सब के मन में प्रश्न उठा कि पौलुस किस मेज़ पर बैठेगा। वह अन्यजातियों के मेज़ पर बैठा और उन के भोजन में भाग लिया। पतरस भी इस से प्रभावित हुआ और वह भी पौलुस के साथ अन्यजातियों के मेज़ पर बैठा। मालूम पड़ता है कि कई दिनों तक पतरस ने इसी रीति का पालन किया।

एक दिन यरूशलेम से आए हुए कुछ विश्वासी भाई, जो यहूदी व्यवस्था का कड़ा पालन करनेवाले थे, उस कमरे के द्वार पर आए। शायद पौलुस की पीठ

द्वार की ओर थी और पतरस का मुँह द्वार की ओर था। जब पतरस ने यरूशलेम से आए हुए उन यहूदी विश्वासियों को देखा जो व्यवस्था के पालन में बहुत कठोर थे, वह अन्यजातियों के भोजन के मेज़ पर से उठा और यहूदियों के मेज़ पर बैठने गया। बरनबास, जो अन्यजातियों के मेज़ पर पौलुस और पतरस के साथ बैठकर खाना खा रहा था, पतरस का पीछा करने लगा। तभी पौलुस ने मुड़कर देखा कि द्वार पर कौन खड़ा था।

पौलुस को बहुत गुस्सा आया। वह गलतियों २:११ में कहता है, "जब कैफा अन्ताकिया में आया, तो मैं ने उस के मुँह पर उस का सामना किया, क्योंकि वह दोषी ठहरा था।" इधर प्रयुक्त यूनानी शब्द प्रकट करता है कि इस झगड़े में पौलुस ने डटकर पतरस का विरोध किया। इस संदर्भ में ही पौलुस कई विपरीत लगने वाले कथन करता है, जिस के कारण मैं उसे "विपरीत कथनों का सुसमाचार" बताता हूँ।

पतरस का विरोध करने के बाद, पौलुस हमें यह महान उक्ति देता है: "मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ और अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है और मैं शरीर में अब जो जीवित हूँ तो केवल उस विश्वास से जीवित हूँ, जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझ से प्रेम किया और मेरे लिए अपने आप को दे दिया। मैं परमेश्वर के अनुग्रह को व्यर्थ नहीं ठहराता, क्योंकि यदि व्यवस्था के द्वारा धार्मिकता होती, तो मसीह का मरना व्यर्थ होता।" (२:२०)

पौलुस का माना यह है कि "सुसमाचार कहता है कि यीशु मसीह मरा ताकि आप जिन्दा रहें।" फिर यह विपरीत उक्ति मिलती है कि "अब आप को मरना है, ताकि मसीह जीवित रहे।" हम जानते हैं कि पौलुस गलतियों २:२० में शारीरिक मृत्यु के बारे में नहीं कहता; क्योंकि उस एक वाक्य में वह तीन बार कहता है, "मैं जीवित हूँ।" पौलुस सचमुच जीवित रहने के बारे में कहता है। इस वाक्य में वह हमें इस के तीन कारण देता है कि वह क्यों वास्तव में जीवित है।

प्रथम बात, पौलुस के कहने का सार यह है कि "मैं वास्तव में जीवित हूँ, क्योंकि में विश्वास से जीवित हूँ।" इस संसार में मैं संपन्न होकर जीवित रहूँगा और नित्यता में भी मैं जीवित रहूँगा, क्योंकि मैं मसीह में विश्वास के द्वारा जीता हूँ - नियमों का पालन करके, अपने प्रयत्नों से स्वर्ग का मार्ग तैयार करने के द्वारा नहीं।

उस का दूसरा दावा यह है कि "मैं जीवित रहता हूँ, क्योंकि मसीह मुझ में जीवित है।" पौलुस नए जन्मे मसीही विश्वासियों से पूछना चाहता है कि "क्या तुम नहीं जानते कि मसीह तुम में जीवित रहता है? क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारी देह पवित्र आत्मा का मन्दिर है, जो तुम में बसा हुआ है?" (१ कुरिन्थियों ६:१९)। यह बहुत प्रभावशाली उपदेश है कि "मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है।" (कुलुस्सियों १:२७)

अंत में पतरस से पौलुस के शब्द थे, "मैं जीवित हूँ, क्योंकि मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ।" वह पतरस से कह रहा था कि अन्ताकिया और गलतिया के विश्वासियों को और हम सब को "मरना" चाहिए ताकि मसीह हम में अपना जीवन जिए; क्योंकि यीशु मसीह ने अपना जीवन छोड़ा, ताकि हम जीवित रहें। इस का अर्थ "रोमियों" में पौलुस के इस उपदेश से समता रखता है कि "अपने शरीरों को जीवित... बलिदान करके चढ़ाओ।" (रोमियों १२:१)

क्या आप वास्तव में जीते हैं, क्योंकि आप विश्वास से जीते हैं? क्या आप सचमुच इसलिए जीते हैं, क्योंकि मसीह आप में रहता है? क्या आप सचमुच इसलिए जीते हैं, क्योंकि आप मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाए गए हैं? क्या आप वास्तव में इसलिए जीते हैं कि यीशु ने अपने प्राण छोड़े ताकि आप जीवित रहें? क्या आप स्वयं मरते हैं ताकि मसीह जीवित रहे? क्या आप इन विपरीत उक्तियों के सुसमाचार का अनुभव करते हैं?

लाक्षणिक वर्णनों और रूपकों का सुसमाचार

"गलतियों" तीसरे और चौथे अध्यायों में पौलुस इस प्रकार वर्णन करता है, जिस से मैं इस पत्री को "लाक्षणिक वर्णनों और रूपकों का सुसमाचार" बताऊँगा। तीसरे अध्याय में वह आठ सवाल पूछता है। अगर आप पौलुस के इन प्रश्नों के उत्तर देते हैं, तो आप देख्र सकते हैं कि पौलुस बहुत प्रभावशाली तर्क करता है कि हम विश्वास से धर्मी ठहराए जाते हैं, अपने कर्मों से नहीं। पौलुस कहता है कि मूसा की व्यवस्था का पालन करने से हमारा उद्धार नहीं होता।

तीसरे अध्याय में पौलुस दो रूपक प्रस्तुत करता है। पहला रूपक इब्राहीम का है, जो अपने अनुभव से हमें दिख्राता है कि विश्वास का संबंध बुद्धि या कर्मों से नहीं होता; वह परमेश्वर से प्राप्त वरदान है। इब्राहीम को विश्वास का यह वरदान मिला। उस ने अपने काम की मज़दूरी के रूप में वह विश्वास नहीं कमाया। इसलिए जब इब्राहीम की पचहत्तर साल की उम्र में परमेश्वर ने उस से

कहा कि उस की संतानों की संख्या संसार के समुद्र-तटों के बालू के कणों के समान और आकाश के तारों के समान अगणित होगी तब इब्राहीम ने परमेश्वर पर विश्वास किया और परमेश्वर ने इस कारण इब्राहीम को धर्मी ठहराया। इस उदाहरण के द्वारा पौलुस हम से कहता है कि अगर हम उद्धार करनेवाले विश्वास के साथ मसीह के सुसमाचार पर भरोसा रखते हैं तो हम इब्राहीम की संतान होते हैं।

पौलुस का दूसरा दृष्टांत व्यवस्था के उद्देश्य का स्वरूप व्यक्त कर देता है। पौलुस लिखता है, "व्यवस्था मसीह तक पहूँचाने को हमारा शिक्षक हुई है कि हम विश्वास से धर्मी ठहरें" (गलतियों ३:२४)। दूसरे शब्दों में व्यवस्था का काम तुम्हारे अहं को तोड़ना है और तुम्हें समझाना है कि तुम्हें एक उद्धारक की आवश्यकता है। पौलुस यों लिखता है, "यदि व्यवस्था के द्वारा तुम्हारा उद्धार हो सकता, तो मसीह का मरना व्यर्थ होता" (गलतियों २:२१)। सच्चाई यह है कि आप कभी अपने आप का उद्धार नहीं कर पाते, क्योंकि व्यवस्था की सारी बातों का पालन करना आप को असंभव होता। व्यवस्था एक शिक्षक थी, जिस ने मसीह के द्वारा उद्धार पाने के लिए आप को तैयार किया।

चौथे अध्याय में पौलुस और एक रूपक प्रस्तुत करता है। इधर हम बाइबल की व्याख्या का एक मुख्य सिद्धांत पाते हैं। बाइबल की कई घटनाओं में इतिहास और रूपक का मेल है। रूपक एक कथा है, जिस के पात्र, स्थान और वस्तुओं का एक दूसरा अर्थ होता है, जिस से हमें नैतिक और आत्मिक शिक्षा मिलती है। जब मैं कहता हूँ कि बाइबल की एक घटना या पात्र रूपक है, तब मेरा माना यह नहीं होता कि वह घटना या पात्र ऐतिहासिक नहीं है।

उदाहरण के तौर पर, पौलुस लिखता है, "इब्राहीम के दो पुत्र थे।" यह ऐतिहासिक बात है। परन्तु वे दोनों पुत्र एक रूपक भी प्रस्तुत करते हैं। पहला पुत्र इश्माएल (जो इब्राहीम की पत्नी की मिस्री दासी हाजिरा से जन्मा) शारीरिक रीति से जन्मा, याने, "परमेश्वर की मदद के बिना मानवीय प्रकृति से"। परमेश्वर इब्राहीम से कह रहा था कि वह उसे एक पुत्र देगा और इब्राहीम ने स्वप्रयत्न से उस वादे को कार्यान्वित करने की कोशिश की। हाजिरा के द्वारा पुत्रोत्पादन करना उस ज़माने में सब से माना हुआ रिवाज़ था। परन्तु समस्या यह थी कि इश्माएल को जन्म देने की योजना सिर्फ इब्राहीम की थी, परमेश्वर की नहीं थी। हाजिरा और इश्माएल की कहानी शरीर से संबंधित रूपक है। अगर

मनुष्य अपनी इच्छा से काम करता है और फिर अपनी योजना पर परमेश्वर का अनुग्रह माँगता है, तो वह पौलुस की राय में शारीरिक रीति का काम है।

इस के विरुद्ध सारा के द्वारा इसहाक को जन्म देने की कहानी में आत्मिक रीति का रूपक है, क्योंकि वह कार्य सिर्फ़ परमेश्वर से संपन्न हुआ। हम बाइबल में पढ़ते हैं कि, "इब्राहीम और सारा बहुत बूढ़े थे और सारा की बच्चे को जन्म देने की उम्र बीत गयी थी" (उत्पत्ति १८:११)। इसहाक का जन्म एक आश्चर्य-कर्म था।

पौलुस गलतियों से और हम से कहता है कि हमारा उद्धार अपने कामों से नहीं होता। परमेश्वर यीशु मसीह के द्वारा हमारे उद्धार का कार्य पूरा करता है। पवित्र आत्मा ने हमें विश्वास और मन-फिराव का वरदान दिया है, ताकि हम परमेश्वर से उद्धार पा सकें। वह उद्धार परमेश्वर का दान है। हमारा उद्धार इसलिए नहीं होता कि हम मूसा की व्यवस्था का पालन करते हैं। हमारा उद्धार हुआ है, इसलिए हम मूसा की व्यवस्था का पालन करते हैं। यही गलतियों के नाम पत्री के स्वतन्त्र सुसमाचार का सार है।

आप ईमादारी से अपनी जांच करें। क्या आप के मन में यह विचार नहीं उठा है कि आप को उद्धार पाने के योग्य काम करने हैं या आप को उद्धार पाने को और उद्धार को सुरक्षित रखने को नियमों की एक सूची माननी चाहिए? पौलुस के विचार में, यह शारीरिक रीति का "उद्धार" है और वह सच्चा उद्धार नहीं है। पौलुस ने जिस स्वतन्त्र सुसमाचार का प्रचार किया, वह यह है कि हमें आत्मिक और आश्चर्यजनक रीति से नया जन्म लेना है। यह उद्धार परमेश्वर के आत्मा के अनुग्रह का दान होता है।

फसल-कटाई का सुसमाचार

पौलुस गलतियों के नाम पत्री के अंत में "शरीर के कामों" और "आत्मा के फल" का अन्तर दिखाता है। एक सच्चे विश्वासी के जीवन में शरीर और आत्मा ये दो परस्पर विरोधी शक्तियाँ सदा संघर्ष मचाती हैं।

यहाँ पौलुस इस का वर्णन करता है, जिसे हम "फ़सल-कटाई का सुसमाचार" नाम दे सकते हैं। पौलुस इधर बोने और फ़सल काटने का रूपक देता है। हमारे जीवन रूपी खेतों में दो प्रकार की शक्तियाँ हैं। हम शरीर के कामों के पौधे लगाकर बढ़ा सकते हैं अथवा हम आत्मा के फल के पौधे लगाकर बढ़ा सकते

हैं। अगर हम अपने जीवन रूपी "बगीचे" में आत्मा के बीज बोएं, तो उस का फल होगा "आत्मा का फल"।

पौलुस लिखता है: "शरीर के काम तो प्रकट हैं अर्थात् व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन, मूर्तिपूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म, डाह, मतवालापन, लाल क्रीड़ा और इन के ऐसे और और काम हैं, इन के विषय में मैं तुम को पहले से कह देता हूँ, जैसे पहले कह भी चुका हूँ, कि ऐसे ऐसे काम करनेवाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे। पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम है; ऐसे ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं" (गलतियों ५:१९-२३)

यह मनुष्य के स्वभाव का वास्तविक चित्रण है। वह हमें बताता है कि जब आप पवित्र आत्मा को प्राप्त करते हैं, तब आप की शारीरिक प्रकृति दूर नहीं होती; बुराई तब भी आप में रहती है। गलतियों पाँचवें अध्याय के इस भाग में पौलुस कहता है कि "आप में दो प्रकार की प्रवृत्तियाँ हैं, जो एक दूसरे के विरोधी हैं।" हमारे मन में रोज़ इन के बीच एक संघर्ष चलता रहता है।

आत्मा का फल

जब हम छठां अध्याय पढ़ते हैं, तब हम ये सुपरिचित शब्द देख पाते हैं: "धोखा न खाओ, परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा। क्योंकि जो अपने शरीर के लिए बोता है, वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा; और जो आत्मा के लिए बोता है, वह आत्मा के द्वारा अनन्त जीवन की कटनी काटेगा।" पौलुस का कहना है कि हमें, जो आत्मिक हैं, आत्मा में रहना है, आत्मा में चलना है, अपने जीवन में आत्मिक कार्यों के बीज बोने हैं और आत्मा का फल उपजाना है।

अन्दर की ओर दृष्टि

पौलुस के विचार में, हमारे अन्दर पवित्र आत्मा के निवास की महान सच्चाई के नौ सबूत हैं। अगर पवित्र आत्मा हम में वास करता है तो जब हम अपने अन्दर दृष्टि डालते हैं, तब हम आत्मा के पहले तीन फल पाते हैं - प्रेम, आनन्द, मेल।

पौलुस यहाँ उस त्यागपूर्ण और निस्वार्थ प्रेम का ज़िक्र करता है, जिस का वर्णन वह १ कुरिन्थियों तेरहवें अध्याय में करता है। बाइबल के उस प्रेम के महान अध्याय में उस ने हम से कहा है कि ऐसा प्रेम कभी नष्ट नहीं होता और वह बिना

किसी बाधा के, सहज रूप से प्रकट होता है। इस तरह से प्रेम करने वालों के प्रेम का मूल आन्तरिक प्रेरणा है। यह त्यागमय प्रेम हमारे जीवन में से जब प्रकट होता है, तब वह हमारे अन्दर से नहीं, परन्तु परमेश्वर की ओर से निकल आता है।

पौलुस के विचार में आनन्द भी आत्मा का फल है, जो हमारे मन में पवित्र आत्मा के निवास की महिमामय सच्चाई की अभिव्यक्ति है। पौलुस कारागृह में रहते समय "आनन्द की पत्री" (फिलिप्पियों के नाम उस की पत्री) लिख सका, क्योंकि वह परमेश्वर के पवित्र आत्मा से भरपूर था। चाहे हमारी हालत कैसी भी हो, हम भी आनन्द से भर उठ सकते हैं, क्योंकि पवित्र आत्मा हम में रहता है। चूँकि पवित्र आत्मा हम में वास करता है, हम दुख़ और दर्द का अनुभव करते हैं, परन्तु दीनता की अवस्था का होना अनिवार्य नहीं है; वह ऐच्छिक ही है।

आत्मा का तीसरा फल मेल या शांति है। अगर हम ने पवित्र आत्मा को प्राप्त किया है, तो हम सब समय शांति से रह सकते हैं, उस परिस्थिति में भी जब मेल और शांति से रहना स्वाभाविक नहीं लगता। पौलुस उसे ऐसी शांति कहता है, जो "समझ से बिलकुल परे" है अथवा जिसे समझना कठिन होता है। (फिलिप्पियों ४:७ देखिए।)

बाहर की ओर दृष्टि

पवित्र आत्मा से प्राप्त प्रेम, आनन्द और मेल के लिए हम अन्दर की ओर देखते हैं। आत्मा के अगले तीन फल के लिए - धीरज, कृपा और भलाई - हम बाहर की ओर देखते हैं। हम दूसरों के साथ अपने संबंध में आत्मा के इस फल का अनुभव करते हैं।

अगर आप स्वभाव से धीरजवन्त व्यक्ति नहीं हैं, तो भी जब पवित्र आत्मा आप में रहता है तब आप को यह देखकर आश्चर्य हो सकता है कि आप में पवित्र आत्मा से प्राप्त धीरज का गुण मौजूद है। जब आप परमेश्वर के साथ अपने संबंध में धीरजवन्त हैं तो उस धीरज को "विश्वास की प्रतीक्षा" नाम दिया जा सकता है। जब आप का धीरज लोगों के साथ संबंध में प्रकट होता है, तब उस धैर्य को "प्रेम की प्रतीक्षा" नाम दिया जा सकता है। उदाहरण के लिए, कभी कभी हमें तब तक प्रतीक्षा करनी पड़ती है, जब प्रभु हमारे बच्चों के जीवन में काम करने लगे। उस के लिए एक प्रकार के अलौकिक धीरज की ज़रूरत होती है, वही प्रेम की प्रतीक्षा है, क्योंकि वह आत्मा का फल है।

आत्मा का अगला फल कृपा है। कृपा का माना यह है कि आप को प्रत्येक व्यक्ति से ऐसा व्यवहार करना चाहिए, मानों वह आप के ही परिवार का हो।

आत्मा का तीसरा फल, जो हमारे आपसी संबंधों में काम करता है, भलाई है। नया नियम यीशु के बारे में कहता है, "वह भलाई करता फिरा" (प्रेरितों १०:३८)। भले काम हमारा उद्धार नहीं करते; परन्तु भले होने में और भलाई करने में कोई गलती नहीं है। जॉन वेसली ने कहा, "भलाई करते रहना, जितना हो सके, जहाँ भी हो, किसी के लिए भी हो, किसी भी स्थान पर हो, किसी भी रीति से हो, कितने भी लंबे समय तक हो करना।" भलाई करते रहना। जब हम अपने चारों ओर के संबंधों को देखते हैं, तब हमारे जीवन में भलाई, कृपा और धीरज, जो आत्मा का फल है, प्रकट होता है।

ऊपर की ओर दृष्टि

आत्मा का अंतिम तीन फल - विश्वास, नम्रता और संयम - तभी लागू होता है, जब हम ऊपर की ओर देखते हैं और परमेश्वर के साथ अपने संबंध पर ध्यान देते हैं।

विश्वास की व्याख्या इस तरह की जा सकती है कि 'निर्भरता सब से उत्तम योग्यता है"। जब मेरा मन-फिराव नहीं हुआ था, मेरा मन संयमित नहीं था। परन्तु जब पवित्र आत्मा मुझ में वास करने लगा, तब मैं ने अनुभव किया कि संयम और निर्भरता मेरे जीवन में आए हैं।

नम्रता आत्मा का फल है। नम्रता कमज़ोरी का दूसरा नाम नहीं है। जब एक मज़बूत घोड़ा लगाम का नियंत्रण स्वीकार करता है और विनीत एवं पालतू बन जाता है, तब वह जानवर कमज़ोर नहीं होता; वह नम्र होता है। दमिश्क की ओर जाने के मार्ग में मरे हुओं में से उठे मसीह से तारसी शाऊल की मुलाकात होती है। यीशु मसीह ने शाऊल से जो पूछा, "तू क्यों लगाम के लोहे के विरुद्ध लात मार रहा है?" (किड. जेम्स बाइबल) उस का सार है कि "तू क्यों लगाम के विरुद्ध खींच रहा है?" जब शाऊल ने उत्तर दिया कि "प्रभु, तू क्या चाहता है कि मैं करूँ?", तब शाऊल ने लगाम स्वीकार किया और नम्र होकर प्रभु की इच्छा पर चलने को तैयार हुआ।

जब एक शक्तिशाली घोड़ा विनीत या नम्र बनता है, तब उसे आज्ञाकारी या सौम्यशील कहा जाता है। विनम्रता के जैसे, इस तरह की आज्ञाकारिता शक्ति को

नियंत्रित करना है। आत्मा के फल की सूची में विनम्रता से समानता रखने वाला गुण है आज्ञाकारिता। वह ऐसी सौम्यता है, जो उस व्यक्ति के जीवन में प्रकट होता आत्मा का फल है, जिस ने पवित्र आत्मा का और पुनरुत्थान किए हुए मसीह का नियंत्रण स्वीकार किया है।

पौलुस से दिया हुआ आत्मा का अंतिम फल संयम है। एक बड़ी कंपनी के मुख्य कार्यवाही अफसर ने, जिस के अधीन हज़ारों लोग काम करते हैं, मुझ से कहा कि "कुछ लोग पहियों के जैसे होते हैं, ढकेलने के बिना वे काम नहीं करते। कुछ लोग "ट्रैइलर" (मोटर गाड़ी से खींचकर ली जानेवाली दूसरी गाड़ी) के जैसे हैं, उन्हें खींचना पड़ता है। कुछ लोग पतंग के जैसे हैं, जिन्हें डोरी से न पकड़ें तो वे उड़ जाते हैं। कुछ लोग अच्छी घड़ी के समान हैं, शुद्ध सोना, खुला चेहरा, ठीक वक्त पर चलनेवाले, विश्वसनीय, दिखाने के बिना काम में व्यस्त और भले कामों में पूरे लगे।"

गलतियों के पांचवें परिच्छेद में प्रेरित पौलुस कहता है कि हमारे अन्दर पवित्र आत्मा रहता है और वह हमें अपने नियंत्रण में रखता है; इसलिए हमें ढकेलने, खींचने या डोरी से पकड़ने की ज़रूरत नहीं है। हम एक अच्छी घड़ी के जैसे काम करेंगे - आत्म-संयम के साथ, विश्वसनीय होकर, शांत रीति से व्यस्त और भले कामों में लगे।

अध्याय २

इफिसियों के नाम पौलुस की पत्री

पौलुस ने सुसमाचार-प्रचार की अपनी यात्राओं में जितनी जगहों पर कलीसियाएँ स्थापित कीं, उन में इफ़िसुस नगर की कलीसिया के साथ ही उस ने सब से अधिक समय बिताया। इफिसुस में पौलुस ने तुरन्नुस की पाठशाला में धर्मोपदेश-विद्यालय चलाया, जहाँ उस ने प्रतिदिन सबेरे ग्यारह बजे से शाम को पाँच बजे तक उपदेश दिया। शायद उस से उपदेश ग्रहण किए विद्यार्थियों ने इफिसुस की कलीसिया से नियंत्रित अन्य कलीसियाओं के अगुए और अध्यक्ष हुए; इन में एक की अध्यक्षता तीमुथियुस को सौंपी गयी थी। इफिसुस की कलीसिया की अगुवाई और संरक्षण में स्थापित थीं स्मुरना, पिरगमुन, थुआतीरा, सरदीस, फिलेदिलफिया और लौदीकिया शहरों की कलीसियाएँ। इन छः और इफिरसुस की भी मिलाकर सात कलीसियाओं के बारे में ''प्रकाशितवाक्य'' के दूसरे और तीसरे परिच्छेदों में हम पढ़ सकते हैं। पौलुस की यह पत्री, जो इफिसियों के नाम लिखी गयी है, वह इन सातों कलीसियाओं और कुलुस्सिया की कलीसिया में भी पढ़ने के उद्देश्य से लिखी गयी हो।

पौलुस की यह पत्री उस की अन्य सब पत्रियों से अधिक गंभीर मानी जा सकती है। इस पत्री के सन्देश का मुख्य तत्त्व इफिसियों १:३ में मिलता है: "हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, कि उस ने हमें मसीह में, स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आशीष दी है।" पौलुस हम से कहता है कि "एक नए जन्मे, आत्मा से नियंत्रित मसीही को जीने के लिए आवश्यक सब आत्मिक अनुग्रह तुम्हारे पास हैं।" वह यह भी कहता है कि वे आशीषें "मसीह में स्वर्गीय स्थानों में" हैं। तीसरी बात पौलुस इफिसियों को (और हमें भी) बताता

है कि उन्हें इस संसार में आत्मिक होकर रहने के लिए आवश्यक सब कुछ प्राप्त हैं। परन्तु वे आत्मिक आशीषें मसीह में, स्वर्गीय स्थानों में हैं।

इफिसुस और दूसरी कलीसियाओं के स्थान आज की तुर्की राज्य में स्थित हैं। पौलुस के ज़माने में, वह भू-भाग, जो आज 'आशिया माइनर' के नाम से जाना जाता है, रोमा साम्राज्य का पूर्वी हिस्सा था। इफिसुस अद्‌भुत सौन्दर्य से युक्त नगर था और वह समुद्रतट पर स्थित सुखवास-स्थान था, इसलिए समाट, सभासद और कई अमीर लोगों के वहाँ गर्मी में रहने के लिए मकान थे। जब पौलुस इफिसुस में था तब रोमा साम्राज्य की महिमा उच्च स्तर पर थी।

जब पौलुस इफिसुस में था, तब वहाँ कई अन्य विषयों का भी बोलबाला था। आज इफिसुस जैसे स्थानों में मूर्तिपूजा, अनैतिकता और लैंगिक अधार्मिकता के भी पुरातत्व के सबूत देखने को मिलते हैं। पौलुस रोमा साम्राज्य के इस अनैतिकता से भरे प्रदेशों के विश्वासियों के लिए ही विशेष रूप से लिखता है कि "इस रोमा साम्राज्य के मध्य, उस के सब अधर्मों और खराबियों के बीच भी मसीह में, स्वर्गीय स्थानों में एक पवित्र व्यक्ति होकर तुम्हारा जीना संभव है।

पौलुस तीसरे स्वर्ग को उठा लिए जाने के अपने अनुभव के बारे में लिखता है (२ कुरिन्थियों १२)। विद्धानों का विश्वास है कि लुस्त्रा में जब पौलुस पर पत्थर मारे गए, तब यह हुआ (प्रेरितों १४:९)। मेरे विचार में पौलुस ने हमेशा उस अनुभव के बाद अपना एक चरण स्वर्गीय स्थान में रखा। वह हम से कहता है कि हम इस भूमि पर जीवित रहते हुए, मसीह में, स्वर्गीय स्थानों में वास्तव में रह सकते हैं। चूँकि मसीह अनन्त है, हम भी जिस मात्रा में हम अपना जीवन मसीह में बिताते हैं उस मात्रा में अनन्त होते हैं। पौलुस उसे "मसीह में, स्वर्गीय स्थानों में" रहना कहता है।

पौलुस की सब पत्रियों में जैसा होता है, वैसा, इस पत्री में भी आप तत्त्वों का एक विभाग और व्यावहारिक विषयों का एक भाग देख सकते हैं। इफिसियों के छः अध्याय हैं। कई विद्धानों का मत है कि पहले तीन परिच्छेद सिद्धांतों के प्रतिपादन और अध्यापन के विभाग के हैं। अंतिम तीन अध्याय- ४,५,६ - इस पत्री में व्यवहार और प्रयोग संबंधी विभाग के हैं।

मेरा मत यह है कि सिद्धांतों के विभाग में चौथे अध्याय के पहले १६ वाक्य भी आते हैं। इन १६ वाक्यों में पौलुस हमें कलीसिया के संबंध में कुछ महान सत्य सिखाता है। तीसरे अध्याय में वह हमें कलीसिया के महान रहस्य के बारे में बताता है। रहस्य का माना है "जल्दी या बाद में प्रकाशित होने वाली गुप्त

बात।" पिन्तेकुस्त के दिन तक किसी ने नहीं जाना कि एक दिन यहूदी और अन्य जाति के लोग मसीह के द्वारा एक किए जाएँगे और मसीह की कलीसिया में सब मिलकर एकत्रित किए जाएँगे। हमें यह सिखाकर कि कलीसिया का प्रवर्तन कैसे होना चाहिए, पौलुस चौथे अध्याय के प्रथम १६ वाक्यों में कलीसिया के विषय का प्रतिपादन समाप्त करता है।

कलीसिया के स्वरूप और प्रवर्तन पर प्रेरणायुक्त निर्देश के अलावा, "इफिसियों" में एक दूसरा विषय भी है। चूँकि पौलुस ने इफिसुस में लंबा समय बिताया - साढ़े तीन साल - और धार्मक पाठशाला में कई विषय पढ़ाए, पहले तीन अध्यायों का एक मुख्य शब्द है "स्मरण करो"। पौलुस इफिसियों से, जिन्हें ख़ूब पढ़ाया गया है, कहता है कि इस पत्री में जिन सिद्धांतों पर वह ज़ोर दे रहा था, उन का ज्ञान उन्हें पहले ही था।

इफिसियों को सिखाए गए तत्त्वों को स्मरण करने को कहने के बाद पौलुस चौथे अध्याय में प्रायोगिक विषयों का विभाग शुरू करता है। यहाँ मुख्य शब्द है "चलो"। वह लिखता है कि "जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए थे, उस के योग्य चाल चलो" (४:१)। पौलुस इफिसियों को दीनता, नम्रता, धीरज, सच्चाई और प्रेम में चलने का निर्देश देता है। दूसरे शब्दों में, जब मैं तुम्हारे साथ इफिसुस में था, तब तुम्हें जो सत्य सिखाया, उसे प्रयोग में प्रकट करने की रीति से तुम चलो।

जब आप "इफिसियों" पढ़ते हैं तब परमेश्वर से प्रार्थना कीजिए कि वह आप की आत्मिक दृष्टि खोले, जिस से आप रोज़ "स्वर्गीय स्थानों में रह" सकें और "अपनी बुलाहट के योग्य चल" सकें।

चीथड़े और चोगे

इफिसियों को पौलुस की पत्री का उद्देश्य यीशु मसीह की कलीसिया को यह समझाना है कि इस संसार में वह किस उद्देश्य के लिए संघटित है। कलीसिया के विषय में यह पत्री पौलुस की अत्युत्तम कृति है। "इफिसियों" आप को और आप की स्थानीय कलीसिया को प्रोत्साहन दे कि परमेश्वर की कृपा से वह इस संसार में परमेश्वर की विश्वसनीय कलीसिया बने। आज संसार को कलीसिया की गवाही की जितनी ज़रूरत है, उतनी पहले कभी नहीं हुई है।

"इफिसियों" के मुख्य विचारों की एक सरल रूपरेखा आप को इस पुस्तक के विषय का पूरा अवलोकन देगी।

प्रथम अध्याय का मुख्य शब्द है विचार। इफिसियों के पहले अध्याय में पौलुस हमें सोचने-विचारने को कई विषय देता है। पहले, "स्वर्गीय स्थानों" के बारे में उस के शब्दों पर विचार कीजिए। पौलुस कहता है कि स्वर्गीय स्थानों में मसीह में जीवन बिताने के लिए आवश्यक सब आत्मीय अनुग्रह आप को मिलते हैं। मसीह उस स्वर्गीय स्थान में रहता है और उस के साथ आप का रहना संभव होता है।

आत्मिक क्षेत्र में जो कुछ रहता है, वह सब अच्छा नहीं है। आत्मिक क्षेत्र में पवित्र आत्मा है और दुष्ट आत्माएँ भी हैं। हमें इस पत्री में बताया गया है कि मसीही विश्वासी होने के नाते हमारी लड़ाई इस आत्मिक क्षेत्र की दुष्ट शक्तियों के विरुद्ध है। पौलुस के अनुसार, मसीह में होने वाला विश्वासी आत्मिक क्षेत्र में रहनेवाली दुष्ट और काली शक्तियों को जीत सकता है।

पहले परिच्छेद में परमेश्वर के सर्वाधिकार के विषय पर पौलुस के वचनों पर हम विचार करें। १-६ वाक्यों में परमेश्वर के बारे में कुछ प्रभावशाली कथन हैं। उस ने जगत की उत्पत्ति से पहले हमें चुन लिया। पौलुस यह विचार प्रस्तुत करता है कि आरंभ-काल से परमेश्वर के मन में योजना थी कि एक कलीसिया होनी चाहिए, जो "बुलाकर अलग किए हुए" लोग होंगे, जो पवित्र जीवन बिताएँगे और इस संसार के लिए साक्षी होकर रहेंगे।

फिर पहले परिच्छेद में उद्धार की प्रक्रिया के बारे में पौलुस के शब्दों पर ध्यान दीजिए। वाक्य १३ और १४ में, हमें उस का एक सुन्दर चित्र मिलता है: हम सुसमाचार सुनते हैं, हम सुसमाचार पर विश्वास करते हैं और हम पर पवित्र आत्मा की छाप लगी है। इस प्रकार परमेश्वर व्यक्त करता है कि, "यह मेरी संपत्ति है या उस पर मेरा ही अधिकार है।"

इफिसियों में पौलुस की प्रार्थनाओं पर भी विचार कीजिए। पौलुस की दो सुन्दर प्रार्थनाएँ, एक इफिसियों १:१५-२३ में और एक ३:१४-२१ में मिलती हैं। इस से प्रकट होता है कि पौलुस के पास प्रार्थना के विषयों की एक सूची थी और वह मध्यस्थता की प्रार्थना करने वाला महान, वीर योद्धा था। जब पौलुस सुनता था कि कोई व्यक्ति मसीही विश्वास में आया है और दिखाया है कि वह यीशु मसीह के लिए काम में सचमुच लगा हुआ है, तब वह उन के लिए निरंतर प्रार्थना करता रहता था।

पौलुस की प्रार्थना-सूची के साथ हमारी प्रार्थना-सूची की तुलना करना दिलचस्प होगा। आत्मिक क्षेत्र में पराजित होने वालों के लिए हम प्रार्थना करते

हैं। परन्तु पौलुस ने उन लोगों के लिए प्रार्थना की, जिन्हें वह यीशु के लिए विजयी होने वाले मानता था। उस ने प्रार्थना की कि उन्हें परमेश्वर के ज्ञान में प्रकाशन की आत्मा प्राप्त हो।

"इफिसियों" के पहले तीनों परिच्छेदों को लागू किया जानेवाला मुख्य शब्द है स्मरण करना। पौलुस ने इफिसियों को बहुत कुछ पढ़ाया था कि अब उसे उन से इतना ही कहना था कि वे वे सारी बातें "स्मरण करें"। वह इफिसियों से कह रहा था, "स्मरण करो कि मसीह में आने के पहले तुम्हारी क्या हालत थी और जब मसीह में परमेश्वर तुम्हारे नए जीवन में आया तब तुम में क्या परिवर्तन हुआ।"

तीसरे परिच्छेद में मुख्य शब्द है प्रकाशन। फरीसी होने के नाते पौलुस यीशु मसीह से घृणा करता था। उस ने कल्पना भी नहीं की थी कि एक दिन परमेश्वर यहूदियों और अन्य जातियों को मिलाकर एक समूह बनाएगा, जो यीशु मसीह की कलीसिया का रुप लेगा। पौलुस इफिसियों से कहता है कि कलीसिया परमेश्वर का एक महान रहस्य है।

चौथे अध्याय में पौलुस मानवीय व्यवहार के बारे में हमें बहुत अच्छे सत्यों को देता है। मैं इस परिच्छेद का सारांश निर्णय शब्द से देता हूँ। इधर पौलुस आप के आत्मिक जीवन की तुलना कपड़े रखने की अलमारी से करता है। उस की एक ओर पुराने जीवन रुपी फटे -पुराने कपड़े हैं। उस की दूसरी ओर नए जीवन के नए चोगे रखे हुए हैं। पुराने जीवन के फटे और जीर्ण कपड़े हैं अलगाव, अज्ञान, कठोरता, सख्त अंतरात्मा, अनैतिकता, वासना की प्रवृत्ति, झूठ, कपट और क्रोध (४:२५-३२)।

कपड़ों के इस रुपक से पौलुस हमें पुराने जीवन रुपी चीथड़ों को निकालने का निर्णय लेने को कहता है। पौलुस की राय में हमें आगे उन चीथड़ों को पहनने की कोई ज़रुरत नहीं है। वह इस के बदले हम से नए जीवन के वस्त्र पहनने को कहता है। "नए मनुष्यत्व को पहन लो, जो परमेश्वर के अनुसार सत्य की धार्मिकता और पवित्रता में सृजा गया है (२४)" "हर एक अपने पड़ोसी से सच बोले" (२५)। "कोई गन्दी बात तुम्हारे मुँह से न निकले, पर आवश्यकता के अनुसार वही जो उन्नति के लिए उत्तम हो, ताकि उस से सुनने वालों पर अनुग्रह हो" (२९)।

दूसरों से बोलने की शक्ति या निपुणता एक महान आत्मिक दान है। पौलुस

कहता है कि बोलने से तुम्हें लोगों की उन्नति करने का और उन्हें अनुग्रह देने का अवसर मिलता है। हर बार जब आप को एक दूसरे विश्वासी से संपर्क करने का मौका मिलता है तब आप को उन्हें पहले की अपेक्षा अधिक उन्नत करके छोड़ना है।

कपड़े पहनने के बारे में कहने के बाद पौलुस "चलने" को कहता है। मसीह में रहना एक दैनिक अनुभव, रोज़ का "चलना" है। आप को धीरे धीरे, कदम कदम बढ़ाकर प्रतिदिन चलना है। मसीह में जीवन बिताने का मार्ग यही है।

पौलुस इफिसियों से कहता है कि "प्रेम में चलो" (५:२) जैसे मसीह ने किया। "ज्योति की संतान की तरह चलो" (८), प्रभु को जो कुछ भाता है, वही हमेशा करो। ज्योति का फल सब प्रकार की भलाई, धार्मिकता और सत्य है। इसलिए भले, धार्मिक और सच्चे कार्य करके चलो; अन्धकार के निष्फल कामों में सहभागी न बनो।

फिर पौलुस वाक्य १५ में कहता है, "ध्यान से चलो" (गौर से, सावधानी से, बुद्धिमानी से चलो)। उस का माना यह है कि हमें अपना सिर उठाकर, आँखें खोलकर, संसार की आवश्यकताओं की ओर जागरूक होकर चलना है। समाज-सेवा के महान कार्य, सामूहिक भलाई की संस्थाएँ जैसे अस्पताल, अविवाहित माताओं के लिए निवास-स्थान, रक्षा-सेवा-संस्थाएँ आदि इस संसार में मसीह के कारण स्थापित हुईं और इसलिए भी कि विश्वासियों ने जाना कि मसीह में, स्वर्गीय स्थानों में रहने का अर्थ क्या है। अगर आप मसीह में हैं, तो आप को इस संसार की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए कुछ प्रयत्न करने की रचनात्मक सहानुभूति होती है। इसलिए पौलुस कहता है, "ध्यान से चलो।"

इस संदर्भ में पौलुस मसीह के अनुयायियों को आज्ञा देता है कि, "आत्मा से परिपूर्ण हो जाओ" (१८)। उस ने लिखा, "दाखरस से मतवाले न बनो, पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ।" आत्मा से परिपूर्ण होने का अर्थ है पवित्र आत्मा के नियंत्रण में रहना। पवित्र आत्मा हमें मसीह में, स्वर्गीय स्थानों में रहने और चलने की शक्ति देगा, चाहे हमारी परिस्थितियाँ कैसी भी हों।

आपसी संबंधों का चोगा

पौलुस कहता है कि परमेश्वर ने सेवा का काम "पवित्र लोगों को" सौंपा है (४:१२)। जिन्हें हम कलीसिया के आम जन (जो पास्टर और उपदेशक नहीं) कहते हैं, उन के लिए पौलुस का दिया हुआ नाम है "पवित्र लोग"। पौलुस के

अनुसार पास्टर - उपदेशक "शिक्षक" है, परन्तु कलीसिया के आम जन खेल के दल के सच्चे खिलाड़ी हैं। पास्टर का उद्देश्य आम जन को साधन-संपन्न करना, उन्हें सिद्ध बनाना, उन की उन्नति करना, प्रेरणा देना और निर्देश देना है और उन्हें बाहर जाकर सेवा के काम करने की चुनौती देनी है। नए नियम में कलीसिया के सार, कर्तव्य और उद्देश्य के स्वरूप का यह एक मुख्य अंश है।

जब पौलुस पांचवां अध्याय लिखता है, तब कहता है कि "पवित्र लोगों" के द्वारा सेवा का काम घर पर ही, जो बहुत मुश्किल स्थान है, आरंभ होता है। क्यों अपना घर अपने विश्वास को प्रयोग में डालने की सब से मुश्किल जगह है? क्योंकि वहीं हमारा सच्चा व्यक्तित्व प्रकट होता है। हम संसार को अपने व्यक्तित्व का एक भाग दिखाते हैं, परन्तु अकसर हम दूसरा भाग - कम आकर्षक भाग- अपने कुटुंब में प्रकट कर देते हैं। घर ही वह स्थान है, जहाँ हमारा सच्चा रूप प्रकट होता है, इसलिए पौलुस लिखता है कि घर पर ही हमारे जीवन में सब से पहले मसीह की सच्चाई प्रकट होनी चाहिए।

इफिसियों ५:२१-२५ में पौलुस लिखता है: "मसीह के भय से एक दूसरे के अधीन रहो। हे पत्नियो, अपने अपने पति के ऐसे अधीन रहो, जैसे प्रभु के। क्योंकि पति पत्नी का सिर है जैसे कि मसीह कलीसिया का सिर है और आप ही देह का उद्धारकर्ता है। पर जैसे कलीसिया मसीह के अधीन है, वैसे भी पत्नियाँ भी हर बात में अपने अपने पति के अधीन रहें। हे पतियो, अपनी अपनी पत्नी से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उस के लिए दे दिया।"

यहाँ पौलुस हमें बाइबल में प्राप्त सब से सुन्दर विवाह संबंधी परामर्श देता है। वह कहता है कि पत्नियों को अपने पतियों के अधीन रहना है और हर बात में अपने अपने पति के वश में रहना है। कई औरतों को इसे स्वीकार करना कठिन होता है। पौलुस पतियों से कहता है कि वे अपनी पत्नियों से प्रेम करें, "जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उस के लिए दे दिया।" (२५)

जब पौलुस कहता है कि पुरुष स्त्री का सिर है, उस का माना यह है कि वह अपनी पत्नी के लिए, विवाह और परिवार के हर कार्य के लिए जिम्मेदार है। इसलिए ही परमेश्वर स्त्री से कहता है कि वह अपने पति के काम को आसान बनावे, क्योंकि उस की जिम्मेदारी बहुत बड़ी है। जब पौलुस स्त्री से कहता है कि

वह "पति के अधीन रहे", तब उस के कथन का सार यह है कि मसीह कलीसिया के लिए जो पद और मूल्य रखता है, वही तुम्हारे लिए तुम्हारे पति का है और कलीसिया का मसीह से जो संबंध है, वही तुम्हारा उस के लिए होना है। इसलिए पति को जो कर्तव्य सौंपा गया है, वह है: "जैसा मसीह ने प्रेम किया, वैसा तुम अपनी पत्नियों से प्रेम करो; उस ने जैसा दिया, वैसा दो; और जैसा मसीह है, वैसा तुम भी अपनी पत्नी और बच्चों के लिए बने रहो।"

यह पतियों और पिताओं को दिया हुआ भारी काम है और सब पुरुषों को अपनी जिम्मेदारी समझनी है। मसीही विवाहों में सब से बड़ी समस्या पतियों के अधीन न रहनेवाली नारियाँ नहीं हैं। सब से मुख्य समस्या पुरुषों की है, जो प्रेम करने, देने और अपनी पत्नियों और बच्चों के प्रति मसीह के जैसे व्यवहार करने की जिम्मेदारी नहीं उठाते।

अगर आप एक पति या पिता हैं तो आप अपनी वह जिम्मेदारी स्वीकार करें, जो आप के लिए परमेश्वर की इच्छा है। अपने कुटुंब में मसीह जैसा होने की शक्ति और कृपा देने को प्रभु से प्रार्थना कीजिए।

विवाह में मुख्य कड़ियाँ

जब परमेश्वर ने विवाह की योजना की, तब उस का उद्देश्य था कि वह एक ऐसा संबंध हो, जिस में दो व्यक्ति एक आत्मा, एक मन और एक शरीर की एकता में बंध जायँ। अगर हम उन की कल्पना पाँच कड़ियों की एक जंजीर के रूप में करें तो हम दो विवाहित मसीही विश्वासियों की एकता का संबंध समझ सकते हैं। पहली कड़ी उन के संबंध के आत्मिक आयाम का प्रतिनिधित्व करती है - माने, वे आत्मा में एक हैं। आत्मिक संबंध वैवाहिक ऐक्य की नींव है; पति-पत्नी का आपसी आत्मिक संबंध उतना ही मज़बूत होता है जितना उन दोनों का यीशु मसीह के साथ व्यक्तिगत संबंध रहता है। उन के आत्मिक ऐक्य का दृष्टांत एक त्रिकोण हो सकता है, जिस में ऊपर का कोण मसीह है और पति-पत्नी दूसरे दोनों भाग के कोण। जितना अधिक वे मसीह की ओर जाते हैं, उतना अधिक उन का परस्पर संबंध निकट और मज़बूत होता है।

दूसरी कड़ी संपर्क की है अथवा उन के मन से एक होने की बात है।

संपर्क ऐसा एक साधन है, जिस से हम अपने विवाह में एकता का पालन करते हैं। परस्पर अच्छा संपर्क हो तो हमें अपने वैवाहिक संबंध को बनाए रखने

का साधन मिलता है। कीटाणु अंधेरे में बढ़ जाते हैं, परन्तु रोशनी में रह नहीं सकते। संपर्क पारस्परिक संबंध पर रोशनी डालता है।

अगली कड़ी अनुकूलता या एक जैसा होने की है, जो ऐक्य का सबूत होता है। कभी कभी मुझे आश्चर्य होता है कि कैसे दो अमुक व्यक्ति एक साथ मिल गए; आश्चर्य इसलिए कि उन के एक प्रकार के मूल्य, लक्ष्य या जीवन - शैली नहीं हैं। जब आत्मिक नींव ठीक है, तब दोनों में कई स्तरों पर अनुकूलता होती है।

पांच कड़ियों में बीच की कड़ी प्रेम की है। यह वह निस्वार्थ, बिना शर्त का प्रेम है, जिस का वर्णन पौलुस १ कुरिन्थियों तेरहवें अध्याय में करता है। वैवाहिक संबंध की विफलता का एक कारण व्यक्तियों का स्वार्थ है। वे मसीह पर और अपने साथी पर मन रखने वाले नहीं होते। उन्हें यीशु मसीह की शिक्षा की बात समझनी है कि "लेने से देना अच्छा।" निस्वार्थ और त्यागपूर्ण प्रेम ऐक्य की शक्ति है।

अगली कड़ी एक दूसरे को समझने की है। ऐक्य को बढ़ाने का साधन है परस्पर सहानुभूति। एक पुरुष और स्त्री के स्वभाव में फरक होता है और उन में प्रत्येक व्यक्ति को दूसरे की भावना, विचार और कार्य की रीति को समझना चाहिए। पतरस पतियों से कहता है कि वे "बुद्धिमानी से पत्नियों के साथ जीवन निर्वाह करें" (१ पतरस ३:७)। दूसरे शब्दों में, अपने जीवन-साथी को अच्छी तरह समझने को कहता है।

अंतिम कड़ी पति-पत्नी के बीच का शारीरिक मेल है। लैंगिक क्रियाएँ ऐक्य की आनन्दपूर्ण अभिव्यक्ति हैं। स्त्री-पुरुष का शारीरिक ऐक्य संपर्क का बहुत घनिष्ट रूप है। लैंगिक एकता के द्वारा ही पति-पत्नी एकता की जंजीर की दूसरी कड़ियों की बातों को अभिव्यक्ति देते हैं।

जब शारीरिक मेल सही प्रकार का होता है, तब लैंगिक क्रिया संबंध का दस प्रतिशत भाग होती है। जब शारीरिक मेल सही नहीं होता, तब वह समस्या का नब्बे प्रतिशत भाग बनता है। अकसर, विवाह में लैंगिक समस्याएँ इसलिए होती हैं कि पति-पत्नी एक ऐसे ऐक्य को आनन्दपूर्ण रीति से व्यक्त करना चाहते हैं, जो वास्तव में उन के बीच नहीं होता। अगर आत्मा या मन की एकता नहीं है, दोनों में विचारों और मूल्यों की अनुकूलता या अनुयोज्यता नहीं है एवं प्रेम और

एक दूसरे को समझने का गुण भी नहीं है, तो लैंगिक ऐक्य भी नीरस और खोखली क्रिया हो जाता है।

दूसरे संबंध

इस वैवाहिक संबंध के अलावा, अध्याय ५ और ६ में पौलुस दासों और स्वामियों के बीच के संबंध का ज़िक्र करता है। विश्वासी आज इन सत्यों को नौकर-मालिक के संबंधों में लागू कर सकते हैं (६:५-९)। माँ-बाप और बच्चों के बीच लागू करने के भी सिद्धांत होते हैं (६:१-४)। इन अध्यायों में पौलुस कहता है कि इस पत्री के सत्यों को लागू करने का कार्य पहले अपने निकट बन्धु-मित्र से शुरू करना चाहिए। हम इस पत्री में होने वाले प्रयोग के भाग को ''आपसी संबंधों का चोगा" बुला सकते हैं।

छठें अध्याय में पौलुस "आत्मिक क्षेत्र" के बुरे पक्ष का ज़िक्र करता है। आत्मिक क्षेत्र में अच्छी और दुष्ट आत्माएँ दोनों होती हैं। पौलुस कहता है कि हमारा युद्ध आत्मिक युद्ध है और हमारा दुश्मन आत्मिक क्षेत्र में है। हमारे शत्रु का वर्णन "प्रधानों, अधिकारियों, आकाश की दुष्टता और अंधकार की आत्मिक सेनाओं" के रूप में किया गया है (६:१२)।

हम इन आत्मिक शक्तियों को जीतकर ही आत्मिक विजयी होकर रह सकते हैं। आत्मिक विजयी होने के लिए हमें परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लेने हैं (१३-१७)। हर दिन हमें परमेश्वर के सारे हथियारों को बांधकर आत्मिक युद्धों में लड़ने जाना है। हमें उद्धार का टोप पहनना है, धार्मिकता की झिलम भी पहननी है; विश्वास की ढाल लेनी है, आत्मा की तलवार रखनी है, जो परमेश्वर का वचन है; पांवों में सुसमाचार-प्रचार के जूते पहनने हैं। प्रार्थना करके प्रत्येक हाथियार बांधना है। इस पापमय संसार में प्रभु के लिए खड़े होने और उस के लिए काम करने को हमारे पास ये आत्मिक हथियार होने हैं। हमें लड़ना है, अपनी शक्ति पर निर्भर होकर नहीं, परन्तु पवित्र आत्मा की शक्ति पर निर्भर होकर।

क्या आप ने उद्धार का टोप पहना है? क्या आप को इस का बोध है कि पाप की शक्तियों से आप का उद्धार किया गया है? क्या आप का हृदय धार्मिकता की झिलम से सुरक्षित किया गया है? क्या आप विश्वास की ढाल का प्रयोग करते हैं? क्या आप आत्मा की तलवार का उपयोग करना जानते हैं, जो परमेश्वर का वचन है? क्या आप दूसरों को सुसमाचार सुनाने के जूते पहन रहे हैं? क्या आप प्रार्थना के साथ हर हथियार बांध रहे हैं?

अध्याय ३

फिलिप्पियों के नाम पौलुस की पत्री

जब हम फिलिप्पियों के नाम पौलुस की पत्री देखते हैं, तब हमें स्मरण करना है कि पौलुस को जो एक स्वर्गीय दर्शन हुआ, उस के फलस्वरूप फिलिप्पी की कलीसिया की स्थापना हुई। उस ने दर्शन में एक पुरुष को देखा, जो खड़ा होकर उस से बिनती कर रहा था कि "मकिदुनिया को आ और हमारी सहायता कर" (प्रेरितों १६:९)। यूरप से उस के पश्चिमी भाग के राज्यों में सुसमाचार और सभ्यता का प्रचार उस स्वर्गीय दर्शन का परिणाम था।

पौलुस के फिलिप्पी छोड़ने के बाद, फिलिप्पी की कलीसिया पौलुस की प्रिय कलीसिया बनी। पौलुस और फिलिप्पी की कलीसिया के बीच के संबंध का वर्णन करने वाला शब्द है "सहभागिता"। पौलुस फिलिप्पी की कलीसिया के संबंध में "सुसमाचार के प्रचार में सहभागिता" कहता है (फिलिप्पियों १:५)। यह किसी भी आदर्श कलीसिया का सुन्दर चित्रण है। कलीसिया ऐसा एक संघटन है, जो अपनी सदस्यता के बाहर के लोगों के फ़ायदे केलिए रहती है, क्योंकि कलीसिया का उद्देश्य "महान नियोग" को पूरा करना है और खोई हुई दुनिया में सुसमाचार का प्रचार करना है।

फिलिप्पी की कलीसिया पौलुस की राय में आदर्श कलीसिया है, उस का मुख्य कारण यह था कि वह एक 'मिशनरी' या सुसमाचार-प्रचार की कलीसिया थी। आप इस का सबूत "फिलिप्पियों" के पहले अध्याय में पा सकते हैं, क्योंकि उस में पौलुस कई बार 'सुसमाचार' शब्द का प्रयोग करता है।

फिलिप्पियों के नाम पौलुस की पत्री उपदेश और शिक्षा देनेवाली पत्री नहीं है, परन्तु वह एक प्रेम-पत्री है। वह एक सुन्दर और उत्प्रेरित धन्यवादी पत्री है। फिलिप्पी की कलीसिया पौलुस के लिए सहायता का केन्द्र थी, क्योंकि जब पौलुस दुसरे शहरों के लोगों की सेवा करता था, तब वह उस को आर्थिक मदद देती थी।

फिलिप्पियों के नाम पौलुस की पत्री उस की "कारागृह पत्रियों" में एक है। इफिसियों, फिलिप्पियों, कुलुस्सियों, फिलेमोन और २ तीमुथियुस को "कारागृह पत्रियाँ" कहते हैं, क्योंकि पौलुस के कारावास-काल में ये लिखी गयी थीं। फिलिप्पी के विश्वासी पौलुस को कारागृह में भी उपहार भेजकर उस की मदद करते रहे। पौलुस फिलिप्पियों को उन के उपहार के लिए धन्यवाद देता है और लिखता है कि मैं दान नहीं चाहता, परन्तु ऐसा फल चाहता हूँ "जो तुम्हारे लाभ के लिए बढ़ता जाए" (४:१७)। पौलुस ने जाना कि उसे यह दान भेज देने के कारण परमेश्वर फिलिप्पियों को अच्छा फल देगा।

फिलिप्पियों के सारे चार अध्याय मसीह के जैसे जीवन बिताने की रूपरेखा प्रकट कर देता है। पहले अध्याय का विषय है "मसीह जैसा जीवन जीने को आवश्यक तत्त्व और उस के लिए तीव्र इच्छा"। यहाँ पौलुस अपने जीवन से उदाहरण देकर दिखाता है कि मसीह का अनुयायी होकर कैसे जीना है।

दूसरे अध्याय में पौलुस "मसीह के जैसे जीने के लिए नमूने" प्रस्तुत करता है। ऐसे कई लोगों के उदाहरण देता है, जिन्हों ने वास्तव में मसीह का-सा जीवन जीने के आग्रह और दर्शन अपने जीवन के नमूनों से प्रस्तुत किया।

तीसरे अध्याय में पौलुस "मसीह के-से जीवन का उद्देश्य और इनाम" प्रकट करता है। प्रेरितों की पुस्तक में उस ने अपने मनफिराव के अनुभव का विवरण जो एक से अधिक बार किया है, उसी मनफिराव के अनुभव को जो दामिश्क के मार्ग पर हुआ, फिर यहाँ बताता है। इस बार वह इस अनुभव के परिणामों का वर्णन करता है। इस संदर्भ में वह कहता है कि हम परमेश्वर की इच्छा को कैसे जान सकते हैं। पौलुस परमेश्वर की इच्छा को "वह इनाम पाना" बताता है, "जिस के लिए परमेश्वर ने उसे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया" (३:१४)। वह हम से कहता है कि कैसे वह इनाम पाना है - कैसे हमारे लिए यीशु मसीह में परमेश्वर के बुलावे और उद्देश्य का पता लगाना है।

चौथे परिच्छेद में पौलुस बहुत व्यावहारिक विषय लिखता है; इसे हम "मसीह का-सा जीवन जीने का नुस्खा" बुला सकते हैं। बहुत प्रायोगिक ढंग से पौलुस हमें बताता है कि मसीह में कैसे जीना है। परमेश्वर हमें व्यक्तिगत शांति की अवस्था में कैसे रखता है, इस विषय पर पौलुस के विचार केन्द्रित रहते हैं।

इस रूपरेखा के द्वारा, हम पौलुस की पत्री के, जो उस ने अपनी प्रिय कलीसिया को लिखी, प्रत्येक परिच्छेद का अध्ययन करेंगे।

प्रबल आग्रह (प्रेम) और दर्शन

पहले अध्याय के वाक्य २० और २१ में पौलुस लिखता है, "मैं तो यही हार्दिक लालसा और आशा रखता हूँ कि मैं किसी भी बात में लज्जित न होऊँ, पर जैसे मेरे प्रबल साहस के कारण मसीह की बड़ाई मेरी देह के द्वारा सदा होती रही है, वैसा ही अब भी हो चाहे मैं जीवित रहूँ या मर जाऊँ। क्योंकि मेरे लिए जीवित रहना मसीह है और मर जाना लाभ है" (१:२०, २१)।

पौलुस के अनुसार, मसीह के अनुयायी का प्रेम और दर्शन अपने को नष्ट करने पर निर्भर है। इसलिए जब पौलुस कहता है कि उस के जीने का आग्रह कैसे उस के कैद में रहने से संबंधित है, तब वह मसीह के लिए अपने जीवन के दर्शन का प्रतिपादन करता है। पौलुस के कहने का सार यह है कि, "मैं चाहता हूँ कि मेरे शरीर में मसीह की महिमा हो, चाहे वह जीवन से हो या मृत्यु से, स्वतन्त्र होकर या कैद में रहकर, स्वास्थ्य से या बीमारी से हो। अगर मैं जीता हूँ तो मेरे जीने का उद्देश्य सिर्फ मसीह को महिमा देनी है। अगर मैं मरूँ, तो मैं अपनी मृत्यु में मसीह को महिमा देना चाहता हूँ।"

यह ऐसे एक व्यक्ति का दर्शन है जो वास्तव में मसीह में अपना जीवन जीता है।

"फिलिप्पियों" में मसीह में जीवन जीने को विश्वासियों के व्यक्तिगत समर्पण के रूप में ही नहीं, परन्तु एक दल के खिलाड़ियों के मिलकर खेलने के रूप में भी माना गया है। प्रभु कलीसिया से चाहता है कि वह आम लोगों को मसीही सेवा के लिए संवारे था संपन्न करे। जब कलीसिया के सदस्य समझेंगे कि कलीसिया की मसीही सेवा के कार्य कलीसिया के सब सदस्यों को सौंपे गए हैं, तब वे "महा नियोग" को पूरा करेंगे और यीशु मसीह की कलीसिया वह रूप लेगी, जिस के लिए उस की स्थापना हुई थी।

पहले अध्याय में, बाद में पौलुस कलीसिया का एक सुन्दर चित्रण देता है: "केवल इतना करो कि तुम्हारा चाल-चलन मसीह के सुसमाचार के योग्य हो कि चाहे मैं आकर तुम्हें देखूँ, चाहे न भी आऊँ, तुम्हारे विषय में यह सुनूँ कि तुम एक ही आत्मा में स्थिर हो और एक चित्त होकर सुसमाचार के विश्वास के लिए परिश्रम करते रहते हो" (१:२७)।

अपनी आदर्श कलीसिया के लिए पौलुस के आदर्श को इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है: "ऐसी कलीसिया जिस का हर सदस्य मसीह में है; जो मसीह में हैं, वे मसीह-जैसे हैं; जो मसीह में हैं और मसीह-जैसे हैं वे एक साथ इतनी प्रभावशाली रीति से मसीह के जैसे हैं कि कलीसिया के बाहर के लोग सुसमाचार पर विश्वास करेंगे।" आप जिस स्थानीय कलीसिया के सदस्य हैं क्या उस की रुपरेखा यही है? क्या आप कह सकते हैं कि आप की कलीसिया का प्रत्येक सदस्य मसीह का सच्चा अनुयायी है, जो सुसमाचार के लायक है? क्या अविश्वासी लोग सुसमाचार का विश्वास करते हैं, क्योंकि वे आप की कलीसिया के सदस्यों को मसीह के जैसे जीवन बिताते हुए और एक साथ मसीह-जैसा रहते हुए देखते हैं?

पौलुस प्रेरित की पत्री फिलिप्पी की कलीसिया को दृष्टांत द्वारा कलीसिया के स्वरूप, सार और कर्तव्य को प्रकट करती है। वह दृष्टांत हर कलीसिया के लिए और यीशु मसीह के हर सच्चे अनुयायी के लिए, अपना दैनिक जीवन मसीह में और मसीह-सा जीने के दर्शन और आग्रह का नमूना बनेगा।

मसीह का-सा जीवन जीने के नमूने

फिलिप्पियों के नाम पौलुस की पत्री का विषय "मसीह का-सा जीवन" है। दूसरे अध्याय में पौलुस हमें मसीह के समान जीने का सामान्य नमूना देता है। पौलुस फिलिप्पियों से कहता है कि मसीह के-से जीवन में विनीत मन (स्वभाव) प्रेम भरा मन और एकता का भाव होना चाहिए।

पौलुस नम्र स्वभाव वाले होने को कहकर फिलिप्पियों को विनय और प्रेम की शिक्षा देता है। पौलुस इस प्रकार विनय का सार देता है कि "एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो" (२:३)। पौलुस यहाँ लज्जा और हीन भावना की बात नहीं बता रहा है, परन्तु दूसरों की उन्नति करने के लिए आवश्यक निस्वार्थ प्रेम

और नम्रता की शक्ति की बात कहता है। अगर आप नम्र हैं तो आप इस से भी बढ़कर कार्य कर सकते हैं। प्रेम-भाव से भरा व्यक्ति इस स्वर्णिम नियम का पालन करता है: "जो कुछ तुम चाहते हो कि मनुष्य तुम्हारे साथ करें, तुम भी उन के साथ वैसा ही करो; क्योंकि व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की शिक्षा यही है" (मत्ती ७:१२)। पौलुस उसी स्वर्णिम नियम को इस प्रकार प्रकट करता है, "हर एक अपनी ही हित की नहीं, बरन् दूसरों की हित की भी चिन्ता करे" (२:४)। क्या आप पहले अपनी आवश्यकताओं और समस्याओं का ख्याल करते हैं? क्या आप अपनी समस्याओं की अपेक्षा दूसरे की आवश्यकताओं और समस्याओं का ख्याल करते हैं?

जब हम नम्र और प्रेम-भरे होते हैं, तब हम अहंभाव और स्वार्थ को जीत सकते हैं और हम एकता में भी रह सकते हैं। पौलुस कहता है कि हमें प्रकट करना है कि हम एक ही आत्मा में स्थिर हैं और एक चित्त के हैं (१:२७)। मसीह के अनुयायी कभी कभी मसीह की कलीसिया में झगड़ा करते हैं। अकसर जब वे ऐसा करते हैं, तब उन झगड़ों के पीछे आप अहंकार और स्वार्थता देख सकते हैं। अगर हम नम्रता, प्रेम-भावना और एकता से युक्त हैं तो हम अपनी कलीसियाओं में होने वाले विरोधों और संघर्षों को मिटा सकते हैं।

मसीह का दृष्टांत

इन सत्यों को प्रतिपादित करने के बाद पौलुस कुछ दृष्टांत प्रस्तुत करता है। पहले मसीह का उदाहरण है (२:५-११)।

यीशु सिर्फ एक मनुष्य नहीं बना। वह मनुष्यों का दास और सेवक बना। उस ने अपने आप को दीन किया और यहाँ तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु भी सह ली, संसार के पापों के लिए क्रूस की मृत्यु सही। चूँकि यीशु ने इस तरह अपने को नम्र किया कि पिता परमेश्वर ने उसे अति महान भी किया (९)।

पौलुस के अनुसार, जैसे यीशु मसीह नम्रता और प्रेम के कारण अपने उच्च पद से नीचे आया, वैसे हमें भी करना चाहिए। हमें स्वार्थी न होकर दूसरों पर और मसीह पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए और प्रेम से भरपूर होना चाहिए, ताकि हमारे जीवन मसीह में और मसीह के जेसे होने के दृष्टांत दूसरों के सामने प्रकट हों।

पौलुस का दृष्टांत

दूसरे परिच्छेद में पौलुस अपना दृष्टांत भी प्रस्तुत करता है। वह लिखता है, "मुझे तुम्हारे विश्वास के बलिदान और सेवा के साथ अपना लोहू भी बहाना पड़े, तो भी मैं आनन्दित हूँ, और तुम सब के साथ आनन्द करता हूँ। वैसे ही तुम भी आनन्दित हो और मेरे साथ आनन्द करो" (१७-१८)। पौलुस हम से कहता है कि उस ने स्वयं मसीह के दृष्टांत का अनुसरण किया। पुराने नियम की मंदिर-आराधना में लोहू, तेल आदि उँडेला जाता था, जब एक याजक वेदी पर इन्हें उँडेलने की भेंट चढ़ाता था। पौलुस अपने आप की तुलना उस तरह की भेंट से करता है; उस का लोहू बहाया गया, ताकि फिलिप्पी विश्वास में आएँ।

तीमुथियुस का दृष्टांत

फिर पौलुस लिखता है: "मुझे प्रभु में आशा है कि मैं तीमुथियुस को तुम्हारे पास तुरन्त भेजूँगा, ताकि तुम्हारी दशा सुनकर मुझे शांति मिले क्योंकि मेरे पास ऐसे स्वभाव का कोई नहीं, जो शुद्ध मन से तुम्हारी चिन्ता करे। क्योंकि सब अपने स्वार्थ की खोज में रहते हैं, न कि यीशु मसीह की। पर उस को तो तुम ने परखा और जान भी लिया है कि जैसा पुत्र पिता के साथ करता है, वैसा ही उस ने सुसमाचार के फैलाने में मेरे साथ परिश्रम किया" (१९-२२)। तीमुथियुस वास्तव में मसीह का बहुत समर्पणशील सेवक था।

फिलिप्पियों के नाम पत्री के दूसरे परिच्छेद के अंत में पौलुस इपफ्रुदीतुस नामक एक बूढ़े आदमी का दृष्टांत प्रस्तुत करता है, जो फिलिप्पियों की भेंट लेकर कारागृह में पौलुस के पास आया। देखें कि पौलुस इपफ्रुदीतुस का वर्णन कैसे करता है: "मेरा भाई और सहकर्मी और संगी योद्धा और तुम्हारा दूत और आवश्यक बातों में मेरी सेवा-टहल करने वाला" (२५)। मसीह की कलीसिया में कई स्तरों की सहभागिता है। मेरे विचार में बूढ़े इपफ्रुदीतुस को भाई, सहकर्मी, संगी योद्धा, दूत और सेवक कहके वर्णन करने में पौलुस सहभागिता के उन स्तरों के बारे में कुछ प्रकट करता है।

सहभागिता के उन स्तरों का अर्थ क्या है? मेरे विचार में, पौलुस के अनुसार एक भाई वह है जो उस के साथ मसीह में होकर रहने वाला है। सहकर्मी वह भाई है, जो "जुए में उस के साथ जुता", काम करने वाला भाई है, जो मसीह में और

मसीह के लिए है। एक संगी योद्धा वह है, जिस ने उस के साथ मसीह में और मसीह के लिए अपनी जान ख़तरे में डाली। इपफ्रुदीतुस पौलुस के साथ इन तीन प्रकार के संबंधों का दृष्टांत है और फिलिप्पियों से भेजा गया दूत और सेवक भी है। वास्तव में यह बूढ़ा आदमी मसीह का-सा जीवन जीने का दूसरा अद्‌भुत दृष्टांत है।

मसीह का-सा जीवन जीने का इनाम

फिलिप्पियों के तीसरे परिच्छेद में प्रेरित पौलुस मसीह का वह उद्देश्य बताता है, जिस के लिए मसीह ने दमिश्क के मार्ग में उसे मनफिराव का अनुभव दिया। ३-११ तक के वाक्यों में पौलुस अपने उस मनफिराव के अनुभव के फलों पर ज़ोर देता है। पौलुस उन सब विषयों की सूची देता है, जिन्हें पहले वह अपनी सफलता की बातें समझता था, उदाहरण के लिए उस का एक फरीसी होना। इन सफलताओं पर मसीह से मुलाकात होने के पहले पौलुस को गर्व था। परन्तु मनफिराव के बाद उस का दृष्टिकोण बदला और वह उन्हें "कूड़ा" समझने लगा (८)। परमेश्वर ने उसे अब और अधिक महत्त्वपूर्ण काम करने को दिया है। यह बहुत सुन्दर परिच्छेद है, जिस में प्रेरित पौलुस, अपने दृष्टांत के द्वारा, हमें वह अच्छा नुस्ख़ा (उपाय) देता है, जिस से हम अपने जीवन में परमेश्वर की इच्छा का पता लगा सकें।

पहले, यह देखना कि जब पौलुस का मनफिराव हुआ तो उस के जीवन में एक क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ। पौलुस उस परिवर्तन के समय एक निर्णय पर पहुँचा, जो अपने जीवन में परमेश्वर की इच्छा का पता लगाने का दृढ़ निश्चय था। फिर वह अपने जीवन में यीशु मसीह के पुनरुत्थान की शक्ति को पाने का प्रयत्न करता है।

पौलुस अपने जीवन की तुलना इनाम पाने के लिए दौड़ में भाग लेने से करता है और उस दौड़ में दौड़ने का एक नियम होता है। वह इनाम पाने का, याने परमेश्वर की इच्छा जानने का नियम यह होता है कि हमें अब जिस मात्रा में आत्मिक प्रकाश और ज्ञान हैं, उस मात्रा तक हम आज्ञाकारी बनें। अगर हम उस प्रकाश का अनुसरण करके काम करें, जो परमेश्वर अब हमें देता है, तो वह हमें तब तक प्रकाश देता रहेगा, जब तक हम उस की परिपूर्ण इच्छा समझ पावें।

पौलुस दौड़ के अंत में प्राप्त इनाम को "मसीह यीशु में परमेश्वर द्वारा ऊपर बुलाए जाने का इनाम" कहता है (१४)

पौलुस परमेश्वर की इच्छा को जानने के और कुछ उपाय हमें देता है। पौलुस लिखता है कि वह केवल एक ही बात को प्राथमिकता देता है। वह यह है कि "जो बातें पीछे रह गई हैं उन को भूलकर, आगे की बातों की ओर बढ़ना" (१३)। यह कहने योग्य है कि पौलुस एक ही बात पर अपना मन रख सका; "निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूँ, ताकि वह इनाम पाऊँ, जिस के लिए परमेश्वर ने मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है।" (१४)

क्या आप को इस प्रकार की महान धुन है? क्या आप को दृढ़ विश्वास है कि जब आप की मुलाकात यीशु मसीह से हुई, तब वह मुलाकात एक अमुक उद्देश्य के लिए हुई? क्या आप को यह विश्वास है कि वह चाहता है कि आप उस के लिए कोई एक विशेष कार्य करें? क्या आप मसीह यीशु में परमेश्वर द्वारा ऊपर बुलाये जाने का इनाम पाना चाहते हैं?

पौलुस हमें परमेश्वर के बुलावे का इनाम पाने के लिए आवश्यक कई सुझाव देता है। अपनी प्राथमिकताओं की जांच कीजिए। सब से प्रधान वह एक कार्य क्या है? जो बातें पीछे रह गईं, उन को भूलकर आगे की बातों की ओर बढ़ते जाओ। जितना प्रकाश आप को मिला है, उस के योग्य होकर चलो और आज ही जिस मात्रा तक और जितनी दूर तक आप देख सकें, उतना तक परमेश्वर की इच्छा की ओर बढ़ो।

शांति के लिए एक नुस्खा

फिलिप्पियों के चौथे अध्याय में पौलुस शान्ति के बारे में लिखता है। वह विश्व-शांति के बारे में नहीं सोच रहा है या क्रूस के बलिदान के द्वारा यीशु ने परमेश्वर के साथ हमारा जो मेल कराया, उस के बारे में भी नहीं। परमेश्वर की शांति निरंतर की शांति की अवस्था है, जो परमेश्वर हमें तब देता है, जब हम उस की शर्तें पूरा करते हैं। फिलिप्पियों अध्याय ४ में पौलुस हमें बारह शर्तें देता है, जिन्हें उस शांति को कायम रखने के लिए हमें पूरा करना है।

उस की पहली शर्त है, "किसी भी बात की चिन्ता मत करो" (६)। पौलुस चिन्ता नहीं करने का उपदेश देता है, क्योंकि चिन्ता निष्फल है, यही नहीं, वह

विनाशकारी भी है। चिन्ता हमारी वह शक्ति मिटा देती है, जिस की ज़रूरत हमें अपनी समस्याओं का सामना करने के लिए है।।

शांति के लिए उस की दूसरी शर्त है, "हर एक बात में प्रार्थना करो" (६)। आप को परमेश्वर से प्रार्थना करने का अधिकार है, चाहे आप की परिस्थिति कैसी भी हो और चाहे आप का कष्ट कितना भी बड़ा हो। प्रार्थना का फल अच्छा होता है, चाहे आप की प्रार्थना आप को एक कठिन समस्या से मुक्त करती हो या आप को उसे सहकर जीने का अनुग्रह देती हो। इसलिए सदा हर बात के लिए प्रार्थना करो।

पौलुस की शांति पाने की तीसरी शर्त सोचने के संबंध में है। वह कहता है, "अच्छी बातों पर ध्यान लगाया करो" (८)। पौलुस हमें प्रोत्साहन देता है कि हम उन बातों पर ध्यान करें, जो सत्य हैं, आदरणीय, उचित, पवित्र, सुहावनी और मनभावनी हैं। अब निश्चय करो कि आप का विचार कैसा हो। आप के विचार भेड़ों के समान हैं, आप उन का चरवाहा जैसे हैं। आप अपने विचारों के वश में न होवें; परन्तु अपने विचारों को वश में करने वाले होवें। श्रेष्ठ बातों पर मन लगाया करें।

मेरी राय है कि जब पौलुस ने यह लिखा, तब वह हमें अपनी व्यक्तिगत विचारशीलता की कुंजी भी दे रहा था। कारागृह में पौलुस को झूठे, अनादरणीय, अनुचित, कलंकित, और कुरूप वातावरण में और बुरे समाचारों के मध्य रहना पड़ा था। उसे सही मार्ग में रहने को, अच्छे विषयों पर ध्यान देना था।

व्यक्तिगत शांति के लिए पौलुस की चौथी शर्त एक बहुत व्यावहारिक बात है। वह कहता है, "जो बातें तुम ने मुझ से सीखीं" और ग्रहण कीं, सुनीं और मुझ में देखीं, उन्हीं का पालन किया करो, तब परमेश्वर जो शान्ति का सोता है तुम्हारे साथ रहेगा" (९)। कभी कभी हम अपनी शांति खो देते हैं, क्योंकि हमें उन बातों को करने की हिम्मत नहीं है, जिन्हें हम सही मानते हैं। हम उन सही बातों पर अमल करें तो हमें शांति मिल सकती है। पौलुस जो उपाय बताता है, वह यह है कि हम जिन बातों को सही जानते हैं और उचित मानते हैं, उन्हें करना। (भजन ४)

शांति की पांचवीं शर्त इन शब्दों में दी गई है, "निदान, जो जो सद्‌गुण हैं" उन पर ध्यान करना (८)। कभी कभी संभव है कि सद्‌गुण में हमारा विश्वास कम

हो जाय। हो सकता है कि विश्वास की हमारी जीवन-यात्रा में अपने श्रेष्ठ कामों के मूल्य पर हम संन्देह करें। उदा. के तौर पर पौलुस ने मसीह की सेवा में जो कुछ किया - एक के बाद एक करके कारावास झेला - उस से क्या लाभ हुआ? अपनी भलाई में विश्वास करने या सन्देह करने का अर्थ पौलुस की राय में यह है। अपने या दूसरे के भले कामों के मूल्य पर सन्देह करने से हमारी शांति नष्ट हो सकती है। शांति पाने की पौलुस की छठीं शर्त है, "धन्यवाद करना" (६)। व्यक्तिगत शांति कृतज्ञता की अच्छी प्रवृत्ति का फल है। जब आप धन्यवाद देकर प्रार्थना करते हैं, आप स्वाभाविक रुप से अपने विचारों को नकारात्मक चिन्तन से हटाकर सकारात्मक प्रवृत्ति की ओर ले जाते हैं। धन्यवादी प्रवृत्ति आप की उन्नति के लिए एक सक्रिय साधन है, जो आप की व्यक्तिगत शांति की अवस्था को बनाए रख्रती है।

शांति की सातवीं शर्त "संतोष करना" है। जब हम प्रभु की इच्छा की पूर्ति की प्रतीक्षा करते हैं तब वह विश्वास की प्रतीक्षा है। जब हम लोगों के साथ धैर्य के साथ संपर्क करते हैं तब वह, प्रेम की प्रतीक्षा में संतोष करना है। अधीरता शांति को नष्ट करती है। शांति देनेवाले पवित्र आत्मा का फल है धीरज (११)।

शांति की आठवीं शर्त पौलुस के अनुसार कोमलता" (५) है। यह हर परिस्थिति को स्वीकार करने की नम्रता है। जब आप जीवन की उन हालतों को स्वीकार करते हैं, जिन्हें बदलना असंभव है, तब मन में शांति होती है। नम्रता और धीरज आत्मा का फल है (गलतियों ५:२२,२३)।

शांति के लिए पौलुस से दी हुई अंतिम चार शर्तें पुनरुत्थान किए हुए मसीह से हमारे संबंध के विषय की हैं। जब वह लिख्रता है कि "प्रभु निकट है", उस का माना यह है कि "प्रभु की निकटता को कभी मत भूलो" (५)। हालांकि पौलुस की अंतिम कैद के समय उस के सब मित्रों और परिचितों ने उसे छोड़ा, तो भी वह कभी अकेला नहीं था। उस ने लिख्रा, "सब ने मुझे छोड़ दिया था। परन्तु प्रभु मेरा सहायक रहा और मुझे सामर्थ दी" (२ तीमुथियुस ४:१६,१७)। कैसी भी कठिन हालत हो, अगर हम स्मरण करें कि प्रभु सदा हमारे निकट है और वह हमें शक्ति दे सकता है, तो हम शांत रह सकते हैं।

इसी संदर्भ में पौलुस शांति की दसवीं शर्त देता है: "प्रभु में आनन्दित रहो" (४)। "प्रभु में आनन्दित रहने" को फिलिप्पियों से कहकर पौलुस

यह उपदेश देता है कि मसीह के ज्ञान में से अपना आनन्द पाना सीखो।

पौलुस शांति की ग्यारहवीं शर्त "जो जो प्रशंसा की बातें हैं" में देता है, माने, "परमेश्वर की प्रशंसा अथवा अंगीकार पाने का मूल्य समझें"। अगर शांति के लिए हम लोगों की प्रशंसा पाने पर निर्भर रहें तो आप के मन की शांति बहुत कमज़ोर और क्षण में भंग होनेवाली हो सकती है। परमेश्वर की और मनुष्य की प्रशंसा एक ही समय पर हर अवसर में नहीं मिल सकती। अगर आप परमेश्वर के अंगीकार को मूल्य देना सीखें तो आप को स्थिर शांति और आनन्द प्राप्त होते हैं। परमेश्वर द्वारा इब्राहीम से कहे हुए शब्दों में हमें इस सत्य की शिक्षा मिलती है। वे शब्द हैं, "मेरी उपस्थिति में या मेरे सामने चल" (उत्पत्ति १७:१)।

शांति की अंतिम शर्त है, "तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखना" (७)। इसे दूसरे शब्दों में ऐसा कहा जा सकता है कि "प्रभु, मैं कर नहीं सकता, परन्तु तू कर सकता है। मैं कौन और क्या हूँ, वह मुख्य नहीं है, परन्तु तू जो है वही मुख्य है। जो कुछ मैं कर सकता हूँ, यह नहीं, परन्तु जो कुछ तू कर सकता है, वही मुख्य है। जो मेरी इच्छा है, वह नहीं, परन्तु तेरी इच्छा ही प्रधान है। अंत में, मेरे कामों का नहीं, परन्तु तेरे कामों का ही मूल्य है।" इस प्रवृत्ति को मैं "चार आत्मिक रहस्य" कहना चाहता हूँ, जो हमें "सब समझ से परे शांति" की ओर ले जा सकते हैं। ये रहस्य हमें दिखाते हैं कि "मसीह यीशु में हमारे हृदय और विचारों को सुरक्षित रखने" का मार्ग क्या है।

बाइबल जिसे परमेश्वर की शांति कहती है, क्या उस निरंतर शांति का अनुभव तुम ने किया है? इन शर्तों को पूरा करने के लिए आवश्यक अनुग्रह देने की प्रार्थना परमेश्वर से करो। परमेश्वर हमें शांति की अवस्था में सुरक्षित रख सकता है, परन्तु वह कई शर्तों पर निर्भर है। अगर हम पौलुस की और बाइबल के दूसरे लेखकों की दी हुई शर्तों का पालन करेंगे तो परमेश्वर हमें व्यक्तिगत, निरंतर शांति की अवस्था में रखेगा।

अध्याय ४

कुलुस्सियों के नाम पौलुस की पत्री

इफिसुस से १६० किलोमीटर की दूरी पर कुलुस्से का नगर स्थित है। संभव है कि कुलुस्से की कलीसिया पौलुस से इफिसुस में स्थापित कलीसिया की अगुवाई में विकसित हुई थी और वह भी प्रकाशितवाक्य में उल्लिखित कलीसियाओं में एक थी (प्रकाशितवाक्य २,३)।

कुलुस्से की कलीसिया की तीन प्रकार की समस्याएँ थीं। पहली, कुलुस्सियों के विश्वास पर एक दार्शनिक और बौद्धिक हमला हो रहा था। फिर नियमों का पालन पूरी तरह करने का सिद्धान्त था। कुलुस्से के पुरानपंथी यहूदी मसीही उधर के भक्त विश्वासियों पर यहूदी नियमों को लादने की कोशिश कर रहे थे। अंतिम समस्या यह थी कि कुलुस्से की कलीसिया के लोग कई सन्देहपूर्ण कार्यों में लग रहे थे, जैसे विलक्षण दर्शन, स्वर्गदूतों की उपासना और दूसरी रहस्यमय क्रियाएँ। कुलुस्से की कलीसिया में जब ये समस्याएँ प्रकट होने लगीं, तब उधर का पास्टर या मसीही सेवक रोम में पौलुस की सलाह लेने आया। शायद उस के आने से पौलुस कुलुस्सियों को यह पत्री लिखने को उत्प्रेरित हुआ।

कलीसिया के विषय पर इफिसियों के नाम पत्री ही पौलुस की सब से उत्कृष्ट पत्री है। "कलीसिया का मसीह" नामक विषय पर कुलुस्सियों के नाम पत्री पौलुस की अत्यंत उत्कृष्ट पत्री है।

कुलुस्सियों के विश्वास पर दार्शनिक हमले का एक भाग यीशु मसीह के व्यक्तित्व से संबंधित था। कलीसिया के विश्वास की घोषणाओं में यीशु मसीह को "सच्चा परमेश्वर" बताया जाता है, परन्तु लोग यीशु मसीह को उस से कम महत्त्व दे रहे थे। ऐसा दर्शन मसीह के ईश्वरत्व के दर्शन का और यीशु मसीह को इम्मानुएल, जिसका अर्थ है "परमेश्वर हमारे साथ", मानने के दर्शन का विरोध करता था। इसलिए कुलुस्सियों के नाम लिखी पत्री में पौलुस का विषय

था यीशु मसीह की सर्वश्रेष्ठता। वह कहता है, "अगर तुम्हें मसीह है तो तुम्हें सब कुछ है। अगर तुम्हें मसीह नहीं है तो तुम्हें कुछ भी नहीं होता। अगर यीशु मसीह तुम्हारे लिए कुछ मूल्य रखता है तो वह तुम्हें सब कुछ है। जब तक यीशु मसीह तुम्हारे लिए सब कुछ नहीं होता, तब तक यीशु मसीह सचमुच तुम्हारे लिए कुछ नहीं होता।"

मैं मानता हूँ कि आज की हमारी कलीसियाओं में वे सब समस्याएँ हैं जो कुलुस्से में थीं। हमारे यहाँ ऐसे लोग हैं जो विश्वासियों पर नियमपालन की गुलामी डालते हैं, जो हमारी इस मसीही शिक्षा के विरुद्ध है कि हमारा उद्धार विश्वास के द्वारा अनुग्रह से हुआ, कामों से नहीं। हमारी कलीसियाओं में ऐसे भी लोग हैं, जिन का विचार है कि जो कुछ आत्मिक है, वह पवित्र आत्मा से है; यह उन्हें आत्मिक क्षेत्र की दुष्ट शक्तियों के अधीन कर देता है। अपने को मसीही विश्वासी कहनेवाले कुछ लोग हैं, जो विश्वास को बरफ़ जैसा ठंडा और औपचारिक बनाते हैं। फिर कलीसियाओं के कुछ लोग मसीह को भाप के जैसे अदृश्य और अतिसूक्ष्म बनाने की कोशिश करते हैं। वे यीशु मसीह को और उस के उपदेशों को इतना जटिल बनाते हैं कि आप उन की बातों का सार नहीं समझते।

पौलुस ने कुलुस्सियों के नाम पत्री में ऐसी ही कुछ समस्याओं का ज़िक्र किया है। इस पत्री में वह उन की गल्तियों को सुधारता है। पौलुस के उन उपदेशों को हम अपनी आज की कलीसियाओं में होनेवाली उस प्रकार की समस्याओं को सुलझाने के लिए लागू कर सकते हैं।

पहले अध्याय में पौलुस मसीह के व्यक्तित्व के बारे में कुछ सुन्दर प्रतिपादन करता है, जो नए नियम में सब से महान हैं। पौलुस लिखता है, "वह तो (मसीह) अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप और सारी सृष्टि में पहिलौठा है। क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हो अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुताएँ, क्या प्रधानताएँ, क्या अधिकार, सारी वस्तुएँ उसी के द्वारा और उसी के लिए सृजी गई हैं। और वही सब वस्तुओं में प्रथम है और सब वस्तुएँ उसी में स्थिर रहती हैं। और वही देह अर्थात् कलीसिया का सिर है; वही आदि है और मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहिलौठा कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे" (१:१५-१८)।

आप इस में देख सकते हैं कि पौलुस मसीह को इस तरह प्रकट कर रहा है कि वह मसीह के व्यक्तित्व और ईश्वरत्व पर होनेवाले सब दार्शनिक हमलों का सामना कर रहा है और गलत विचारों का खण्डन कर रहा है।

हम से यह कहने के अलावा कि मसीह कौन है, वह यह भी कहता है कि मसीह ने क्या किया। "उसी ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र

के राज्य में प्रवेश कराया, जिस में हमें छुटकारा अर्थात् पापों की क्षमा प्राप्त होती है" (१३-१४)। क्या यह सुसमाचार का और यीशु मसीह के काम का एक अद्‌भुत प्रतिपादन नहीं है?

पहले परिच्छेद में पौलुस कुलुस्सियों को मसीह के काम का फल स्वीकार करने का मार्ग भी बताता है: "एकमात्र शर्त यह है कि तुम सत्य-विश्वास की नींव पर दृढ़ बने रहो, सुसमाचार के विश्वास को कि यीशु तुम्हारे लिए मरा, न छोड़ो और अपने उद्धार के लिए उसी पर भरोसा रखो" (२३)।

क्या अब तुम समझते हो कि मसीह कौन है और उस ने हमारे लिए क्या किया? क्या तुम समझते हो कि मसीह ने तुम्हारे लिए जो किया, उसे कैसे प्राप्त कर सकते हो?

फिर पौलुस की बातें समझो कि मसीह में कैसे जीना है। वह लिखता है कि "सो जैसे तुम ने मसीह यीशु को प्रभु करके ग्रहण कर लिया है वैसे ही उसी में चलते रहो। और उसी में जड़ पकड़ते और बढ़ते जाओ; और जैसे तुम सिखाए गए वैसे ही विश्वास में दृढ़ होते जाओ और अत्यंत धन्यवाद करते रहो" (२:६-७)। यह मसीह में जीने के बारे में और मसीह में जीने के फल के बारे में एक सुन्दर व्यावहारिक उक्ति है।

दूसरे अध्याय में पौलुस हमें बताता है कि हमें मसीह में क्या क्या हैं। वह लिखता है कि "क्योंकि उस में ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है और तुम उसी में भरपूर हो गए हो जो सारी प्रधानता और अधिकार का शिरोमणि है। उसी में तुम्हारा ऐसा खतना हुआ है जो हाथ से नहीं होता, अर्थात् मसीह का खतना, जिस से शारीरिक देह उतार दी जाती है। और उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए और उसी में परमेश्वर की शक्ति पर विश्वास करके, जिस ने उस को मरे हुओं में से जिलाया, उस के साथ जी भी उठे" (२:९-१२)। पौलुस के ये शब्द उन नियम-पालन पर ज़ोर देनेवालों की ओर हैं, जो कुलुस्सियों से कहते हैं कि उन्हें उद्धार पाने के लिए खतना करना है।

कुलुस्सियों के नाम पौलुस की पत्री उस की गहरी आत्मिक अन्तर्दृष्टि प्रकट करती है। वह दृष्टान्त के द्वारा हमें प्रार्थना का महत्त्व समझाता है, जैसे यीशु ने किया था। कुलुस्से की कलीसिया के विश्वासियों के लिए पौलुस की प्रार्थना देखिए और अपनी प्रार्थना से उस की तुलना कीजिए। फिर पौलुस ने जैसे प्रार्थना की वैसे प्रार्थना करना सीखने की कोशिश करे। विश्वास करो कि परमेश्वर प्रार्थना सुनता और उत्तर देता है और यह आप को उस के मार्गों को समझने और अनुसरण करने में सहायक होगा।

अध्याय ५

थिस्सलुनीकियों को पौलुस की पहली पत्री

थिस्सलुनीकियों के नाम पौलुस की पहली पत्री का विषय है यीशु मसीह का दूसरा आगमन। यह विषय थिस्सलुनीके के विश्वासियों के लिए प्रधान था, क्योंकि पौलुस बहुत कम समय तक उन के साथ था, तो भी उस ने उन्हें यह बात सिखायी थी।

प्रेरितों की पुस्तक में थिस्सलुनीके में कलीसिया को स्थापित करने के विषय का एक अच्छा विवरण है (१७:१-१५)। ये वाक्य हमें यह समझने में भी सहायक होते हैं कि जब उस शहर में कलीसिया स्थापित की गई तब पौलुस ने वहाँ अद्‌भुत सेवा की। पौलुस वहाँ उन के साथ तीन सब्त के लिए था, इसलिए इस महान कलीसिया की स्थापना एक महीने से कम समय में हुई। यद्यपि पौलुस यहूदियों के आराधनालय में जाता और उपदेश देता था, तो भी थिस्सनुलिके के प्रथम विश्वासी यहूदी नहीं थे, परन्तु उधर के प्रधान यूनानी स्त्री-पुरुष थे। इस का परिणाम यह हुआ कि यहूदी पौलुस से जलने लगे। उन्हों ने पौलुस को इतनी कठोर रीति से पीड़ित किया कि उसे वह शहर छोड़ना पड़ा और पहले बिरीया, फिर अथेने और कुरिन्थुस को जाना पड़ा, जहाँ उस ने थिस्सलुनीकियों के नाम पहली पत्री लिखी। तीमुथियुस और सीलास थिस्सलुनीके में रहे और बाद में पौलुस के साथ जा मिले।

जब पौलुस ने थिस्सलुनीके में तीन हफ्ते बिताए, तब उस ने यीशु मसीह के दूसरे आगमन के विषय को बहुत ज़ोर देकर सिखाया होगा। जब तीमुथियुस कुरिन्थुस में पौलुस के पास आया तब उस ने पौलुस को थिस्सलुनीके के विश्वासियों की हालत सुनायी। उस ने कहा कि थिस्सलुनीके के विश्वासी प्रभु में

स्थिर हैं, परन्तु यहूदी इस हद तक उन्हें पीड़ित कर रहे हैं कि कई नए विश्वासियों की जानें नष्ट हुईं।

तीमुथियुस ने यह भी कहा कि थिस्सलुनीकियों के मन में यीशु मसीह के पुनरागमन के विषय पर कई सन्देह और प्रश्न थे। पीड़ित किए जाने से शहीद होनेवाले अपने बन्धु-मित्रों के बारे में भी वे बहुत चिन्तित थे। जब यीशु मसीह अपनी कलीसिया के लोगों के पास फिर आएगा तब क्या उन्हें वे आशीर्वाद नहीं मिलेंगे?

इस दृष्टि से पौलुस के इन शब्दों पर विचार कीजिए, जो यीशु के दूसरे आगमन के बारे में और कलीसिया के उठाए जाने के आनन्द के बारे में हैं। कलीसिया का आनन्द यह उपदेश है कि यीशु के आने के पहले विश्वासी आकाश में उठा लिये जाएँगे। पौलुस के इन शब्दों में पीड़ित थिस्सलुनीकियों के लिए प्रेम से भरा उस का हृदय प्रकट होता है, "हे भाइयो, हम नहीं चाहते कि तुम उन के विषय में जो सोते हैं, अज्ञान रहो; ऐसा न हो कि तुम औरों की नाईं शोक करो जिन्हें आशा नहीं। क्योंकि यदि हम प्रतीति करते हैं कि यीशु मरा और जी भी उठा तो वैसे ही परमेश्वर उन्हें भी जो यीशु में सो गए हैं, उसी के साथ ले आएगा। क्योंकि हम प्रभु के वचन के अनुसार तुम से यह कहते हैं कि हम जो जीवित हैं और प्रभु के आने तक बचे रहेंगे तो सोए हुओं से कभी आगे न बढ़ेंगे। क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा और परमेश्वर की तुरही फूँकी जाएगी, और जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे। तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उन के साथ बादलों पर उठा लिए जाएंगे कि हवा में प्रभु से मिलें और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे। सो इन बातों से एक दूसरे को शांति दिया करो" (१३-१८)।

यीशु मसीह के दूसरे आगमन के विषय पर बाइबल के कई प्रधान प्रकरणों में यह एक है। यह प्रकरण लिखते समय पौलुस के दिल के भार को देखिए। पौलुस, जो एक महान शिक्षक था, यह नहीं चाहता था कि थिस्सलुनीके के पीड़ित किए जाने वाले नए विश्वासी यीशु के दूसरे आगमन के कुछ पहलुओं के विषय पर अज्ञानी होकर रहें (१३)।

पौलुस, जो महान सुसमाचार-प्रचारक था, यह नहीं चाहता था कि थिस्सलुनीके के विश्वासियों का विश्वास कमज़ोर पड़े। उस के लिखने का सार यह है कि अगर हम विश्वास करते हैं कि यीशु मरा और फिर जीवित हुआ, तो हम इस का भी विश्वास कर सकते हैं कि हमारे प्रिय बन्धु जो मरे हैं, वे फिर जी उठेंगे (१४)। फिर

वह उन्हें कलीसिया के उठाए जाने के आनन्द के संबंध में सूक्ष्म बातों का विवरण देता है।

पौलुस, जो महान भविष्यद्वक्ता था, यह चाहता था कि थिस्सलुनीके के विश्वासी परमेश्वर का वचन सुनें। वह लिखता है कि "प्रभु के वचन के अनुसार" उन से यह कहता है (१५)।

अंत में पौलुस, जो महान सेवक या पास्टर था, यह नहीं चाहता था कि उस के प्रिय अनुयायी निराश और दुखी होकर रहें। शायद यही पौलुस के लिए तिस्सलुनीकियों को यह सच्चा समाचार बांट देने का मुख्य प्रेरक था, क्योंकि उन की मुख्य चिन्ता मारे गए अपने प्रिय जनों के लिए थी। वह लिखता है, "जब प्रभु यीशु स्वर्ग से उतर आएगा, तब जो मसीह में मरे हैं वे पहले जी उठेंगे" (१६)। बाइबल के इस प्रभावपूर्ण प्रकरण में कलीसिया का उठाया जाना सब से मुख्य उपदेश है। पौलुस इन्हीं तत्त्वों का सार कुरिन्थियों को भी लिखता है (१ कुरिन्थियों १५:५१, ५२)। यीशु इसी सत्य को जैतून के पहाड़ पर किए गए उपदेश में देता है (मत्ती २४:४०,४१)।

पौलुस इस पत्री के आरंभ से सिखाता है कि मसीह के वापस आने के विश्वास में क्या क्या व्यावहारिक तत्त्व निहित हैं। पत्री के आरंभ में उन्हें अभिवादन करते हुए पौलुस लिखता है, "हम अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें स्मरण करते और सदा तुम सब के विषय में परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं। और अपने परमेश्वर और पिता के सामने तुम्हारे विश्वास के काम और प्रेम का परिश्रम और हमारे प्रभु यीशु मसीह में आशा की धीरता को लगातार स्मरण करते हैं।"

इस कलीसिया को लिखते समय पौलुस उन के "विश्वास के काम" और "प्रेम के परिश्रम" का उल्लेख एक विशेष कारण से करता है। थिस्सलुनीके के कुछ लोगों ने अपने काम-धंधे छोड़े थे, क्यंकि उन्हों ने यीशु के दुबारा आने के उपदेश का गलत अर्थ समझ लिया था। उन्हों ने सोचा कि यीशु का वापस आना इतना सन्निकट है कि वे प्रभु के आने का इन्तज़ार करके दिन भर बैठे रहे। पौलुस सूचित कर रहा है कि तुम्हें यीशु मसीह के दूसरे आगमन में विश्वास है तो तुम्हें मसीह के लिए प्रेम का परिश्रम करना है।

१ थिस्सलुनीकियों के दूसरे परिच्छेद में हम एक आदर्श मिशनरी पौलुस का अद्भुत स्वरूप देख सकते हैं। आप पौलुस का साहस, सच्चाई, सीधापन और परमेश्वर एवं परमेश्वर के वचन के प्रति उस की विश्वासयोग्यता को देख सकते

हैं। वह उन से कहता है कि उस के जीने का उद्देश्य उन की आत्मिक उन्नति करना है (१-१२)।

तीसरे परिच्छेद में यह पत्री लिखने का कारण हमें बताया गया है। "इस कारण जब मुझ से और न रहा गया तो तुम्हारे विश्वास का हाल जानने के लिए भेजा कि कहीं ऐसा न हो कि परीक्षा करने वाले ने तुम्हारी परीक्षा की हो और हमारा परिश्रम व्यर्थ हो गया हो। पर अभी तीमुथियुस ने जो तुम्हारे पास से हमारे यहाँ आकर तुम्हारे विश्वास और प्रेम का सुसमाचार सुनाया और इस बात को भी सुनाया कि तुम सदा प्रेम के साथ हमें स्मरण करते हो और हमारे देखने की लालसा रखते हो, जैसा हम भी तुम्हें देखने की। इसलिए, हे भाइयो, हम ने अपनी सारी सकेती और क्लेश में तुम्हारे विश्वास से तुम्हारे विषय में शांति पायी। क्योंकि अब यदि तुम प्रभु में स्थिर रहो तो हम जीवित हैं" (५-८)। यह उस प्रेरित पौलुस के महान हृदय की सुन्दर झांकी देता है, जो मिशनरी, सेवक, शिक्षक और आधे नए नियम का रचयिता भी था।

क्या आप यीशु मसीह की कलीसिया के उठाये जाने में विश्वास करते हैं? प्रेरित पौलुस ने हमें अपना यह आशय दिया है ताकि हमें आश्वासन मिले। कलीसिया के प्रभु के साथ उठाए जाने में जो आश्वासन हो सकता है, उसे मत खो दें। वह सब विश्वासियों की महान आशा है, इस संसार की एकमात्र आशा है।

चौथे अध्याय में, जिस प्रकरण को हम ने प्राधान्य दिया, उस के अलावा पौलुस अपने उपदेश के कुछ व्यावहारिक पहलू भी दिखाता है। वह उन थिस्सलुनीकियों से, जो मसीह के पुनरागमन के सन्देश से आकर्षित थे, कहता है कि उन्हें शान्त रहकर और अपना अपना काम-काज करके मसीह के श्रेष्ठ गवाह होने चाहिए (११-१२)।

पांचवें अध्याय में पौलुस पहले मसीह के दूसरे आगमन के समय और काल के संबंध में कुछ टिप्पणी देता है, फिर वह अपने उपदेश के स्पष्ट और बुनियादी प्रायोगिक पहलुओं पर ध्यान देता है। उस के शब्द हैं, "पर हे भाइयो, इस का प्रयोजन नहीं कि समयों और कालों के विषय में तुम्हारे पास कुछ लिखा जाय। क्योंकि तुम आप ठीक जानते हो कि जिस रात को चोर आता है, वैसा ही प्रभु का दिन आनेवाला है। जब लोग कहते होंगे कि कुशल है और कुछ भय नहीं, तो उन पर एकाएक विनाश आ पड़ेगा, जिस प्रकार गर्भवती पर पीड़ा; और वे किसी रीति से न बचेंगे" (१-३)।

इस भाग में पौलुस का विचार यह हो सकता है कि मसीह की वापसी के निश्चित समय के बारे में हमें सोचना नहीं चाहिए। पौलुस आगे कहता है, "पर हे भाइयो, तुम तो अन्धकार में नहीं हो, कि वह दिन तुम पर चोर की नाईं आ पड़े। क्योंकि तुम सब ज्योति की सन्तान और दिन की सन्तान हो, हम न रात के हैं, न अन्धकार के हैं। इसलिए हम औरों की नाईं सोते न रहें, पर जागते और सावधान रहें" (४-६)।

कलीसिया के "उठाये जाने के महान आनन्द" के अलावा, मसीह की वापसी से संबंधित दूसरी घटनाओं पर भी हमें ध्यान देना है, जैसे, हज़ार वर्षों का राज्य (प्रकाशितवाक्य २०:४-६ देखिए)। कुछ लोग इस राज्य का वाच्यार्थ स्वीकार करते हैं; परन्तु दूसरे उसे केवल प्रतीक मानते हैं। अगर आप मानें कि यह राज्य एक आत्मिक या प्रतीकात्मक राज्य है तो आप को "हज़ार वर्ष के स्वर्णयुग का अविश्वासी" कहलाता है। अगर आप मानें कि यीशु मसीह की वापसी के बाद, वही भूमि में हज़ार वर्षों के राज्य कायम करेगा, तो आप को "हज़ार वर्षों के राज्य के पहले मसीह की वापसी का विश्वासी" कहलाता है। अगर आप मानें कि इस भूमि की हालत इस तरह अधिकाधिक सुधरती जाएगी कि भूमि पर स्वर्ग का राज्य एक सच्चाई होगा और उस वक्त यीशु मसीह वापस आएगा तो आपको "हज़ार वर्षों के राज्य के बाद मसीह की वापसी का विश्वासी" कहलाता है।

ऐसे भी लोग हैं जो कहते हैं कि वे "सब प्रकार के हज़ार वर्षों के राज्य के विश्वासी" हैं, क्योंकि उन की राय में वे सब ठीक हैं। परन्तु यीशु मसीह की वापसी के बारे में आप का अध्यात्मवादी दृष्टिकोण कुछ भी हो, थिस्सलुनीकियों के नाम पौलुस की पहली पत्री का प्रयोग-भाग, ख़ासकर पांचवें अध्याय के अंत में, बहुत व्यावहारिक है (१२-२२)। इधर वह आज्ञाओं का विस्फोट जैसा कर देता है कि यीशु मसीह के वापस आने के सत्य के प्रकाश में विश्वासी की क्या प्रवृत्तियाँ और क्रियाएँ होनी चाहिए।

इस पत्री में हमें सीखने और अपने जीवन में लागू करने के दो प्रधान सत्य हैं। पहला, प्रभु यीशु वापस आ रहा है; और दूसरा, जब हम उस की वापसी का इन्तज़ार करते हैं, तब हमें उस के लिए प्रेम के परिश्रम में लगे रहना चाहिए।

अध्याय ६

थिस्सलुनीकियों के नाम पौलुस की दूसरी पत्री

थिस्सलुनीकियों के नाम पौलुस की दूसरी पत्री बहुत छोटी है और पहली पत्री के तुरंत बाद वह लिखी गई। दूसरी पत्री के अध्याय एक और तीन का विषय पहली पत्री के विषय से मिलता-जुलता है, इसलिए मैं उन दो अध्यायों की गहरी व्याख्या नहीं करता। आप को उन्हें पढ़के ध्यान से उन का अध्ययन करना है। इस दूसरी पत्री में मुख्य है दूसरा अध्याय।

इस अध्याय में पौलुस कुछ प्रश्नों का उत्तर देता है और थिस्सलुनीके की नयी कलीसिया की दुविधा को दूर करता है। वह लिखता है, "हम अपने प्रभु यीशु मसीह के आने और उस के पास अपने इकट्ठे होने के विषय में तुम से विनती करते हैं, कि किसी आत्मा या वचन या पत्री के द्वारा जो कि मानो हमारी ओर से हो, यह समझकर कि प्रभु का दिन आ पहुँचा है, तुम्हारा मन अचानक अस्थिर न हो जाए और न तुम घबराओ" (१-२)।

पौलुस यहाँ "प्रभु के साथ कलीसिया के उठाए जाने" के बीच में, जिस के बारे में उस ने थिस्सलुनीकियों के नाम पहली पत्री के चौथे अध्याय में कहा और "प्रभु के दिन" के बीच में, जिस का वर्णन योएल, सपन्याह और जकर्याह जैसे भविष्यद्वक्ताओं द्वारा किया गया है, फरक समझा देता है। पतरस ने भी २ पतरस, तीसरे अध्याय में ''प्रभु के दिन" की पूर्वसूचना दी है।

कलीसिया का प्रभु के साथ उठाया जाना और प्रभु का दिन, ये दोनों एक ही घटना नहीं हैं। 'प्रभु के दिन' को यहोवा का भयानक दिन जो नाश और न्याय का दिन भी कहा जाता है; वह भूमि पर परमेश्वर के भयंकर न्याय का दिन है। कलीसिया के "प्रभु के साथ उठाए जाने का आनन्द" वह घटना है जो कलीसिया का महान आनन्द है। यीशु के शब्दों में, एक ले लिया जाएगा, दूसरा छोड़ा जाएगा (मत्ती २४:४०, ४१)।

अब आप समझ सकते हैं कि क्यों थिस्सलुनीकियों को दुविधा थी। थिस्सलुनीकियों के नाम लिखी दूसरी पत्री में पौलुस कलीसिया के आनन्द में और प्रभु के दिन में फरक को बहुत स्पष्ट करता है।

सारांश में

प्रभु के दिन के आने के पहले, जो घटनाएँ होनेवाली हैं, उन्हें जो पौलुस व्यक्त करता है, वह गहरे सत्य का मुख्य तत्व है। पौलुस ने सिखाया कि जब तक अधर्म की शक्ति जो हमेशा शैतान के द्वारा काम करती रहती है और अब मसीह की शक्ति से नियंत्रित रहती है, पूरी तरह प्रकट होके भूमि पर स्वतन्त्रता से राज्य न करे तब तक "प्रभु का दिन" नहीं आएगा। जब वह होता है, तब लोग अपनी पापमय प्रवृत्तियों में पूरी तरह डूबे रहेंगे। वह बहुत भयानक काल होगा। उस समय जो व्यक्ति संसार के नेता के पद पर आएगा, उसे बाइबल 'मसीह का विरोधी' कहता है। 'मसीह का विरोधी' सच्चे मसीह का स्थान पाने की कोशिश करेगा, मसीह के विरुद्ध और यीशु मसीह से प्रेम करने वाले उस के अनुयायियों के विरुद्ध लड़ेगा।

कुछ लोग सोचते हैं कि कलीसिया भूमि में इस भयंकर पीड़न की शिकार होगी, परन्तु दूसरे लोग उस से बच जाएँगे। थिस्सलुनीकियों के नाम पहली पत्री में पौलुस लिखता है, "क्योंकि परमेश्वर ने हमें क्रोध के लिए नहीं, परन्तु इसलिए ठहराया कि हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा उद्धार प्राप्त करें। वह हमारे लिए इस कारण मरा कि हम चाहे जागते हों, चाहे सोते हों, सब मिलकर उसी के साथ जीएँ (५:९-१०)। इन दो वाक्यों के आधार पर "हज़ार वर्षों के राज्य के पहले मसीह की वापसी के विश्वासी" बाइबल-पंडित सोचते हैं कि "बड़े क्लेश" के वक्त पर जैसा होता है, वैसा परमेश्वर अपने लोगों पर अपना प्रकोप नहीं उँडेल देगा। कलीसिया के उठाए जाने के द्वारा वह अपने लोगों की रक्षा करेगा और शेष छोड़े जाने वाले अविश्वासी जनों पर वह अपना कोप उँडेल देगा।

क्या आप को इन शब्दों से तसल्ली होती है? अगर आप यीशु मसीह को राजाधिराज और प्रभुओं का प्रभु मानते हैं, जो हमेशा के लिए राज्य करेगा, तो पौलुस के शब्द आप को आशा और सांत्वना देंगे। अगर यीशु आप का प्रभु और उद्धारक नहीं है तो ये शब्द न्याय-दण्ड के शब्द हैं। यीशु को अपना उद्धारक मानकर उस पर विश्वास कीजिए। अभी उसे अपना प्रभु स्वीकार करके उस के अधीन रहने की प्रतिज्ञा करें; तब ये आप के लिए अनुग्रहकारी आशा के और बहुत अधिक सांत्वना के शब्द होंगे।

अध्याय ७

तीमुथियुस के नाम पौलुस की पहली पत्री

तीमुथियुस के नाम पहली और दूसरी पत्रियाँ और तीतुस के नाम पौलुस की पत्री "सेवकाई की पत्रियाँ" मानी जाती हैं, क्योंकि ये उन दो व्यक्तियों को लिखी गयीं, जिन्हें पौलुस ने सेवक या पास्टर होके नियुक्त किया और जिन्हें उस ने परामर्श दिया। पौलुस ने १ तीमुथियुस और तीतुस एक ही समय पर लिखीं और दोनों में बहुत समानता है। बाद में दूसरी बार रोम में जब वह कारागृह का कठिन दण्ड भोग रहा था, तब उस ने २ तीमुथियुस लिखी, जिस में पौलुस के कुछ अंतिम शब्द मिलते हैं। इसलिए हम पहले १ तीमुथियुस, फिर तीतुस की व्याख्या करेंगे, इस के बाद फिलेमोन के नाम पौलुस की छोटी पत्री पर विचार करेंगे और अंत में २ तीमुथियुस का अध्ययन प्रस्तुत करके पौलुस की पत्रियों का सर्वेक्षण समाप्त करेंगे।

पौलुस ने तीमुथियुस को इफिसुस की कलीसिया का पास्टर होके बहुत युक्तिपूर्वक नियुक्त किया था। तीतुस को क्रेते द्वीप में रखा था। जब हम तीमुथियुस और तीतुस के नाम लिखी पत्रियाँ पढ़ते हैं, तब दो अलग प्रकार के व्यक्तित्व प्रकट होते हैं।

मालूम पड़ता है कि तीमुथियुस एक युवक था और बहुत दयालु और भावुक व्यक्ति था, जिसे पौलुस ऐसे एक पास्टर (सेवक) के नमूने के रूप में देखता है, जो अपने जनों की देखरेख प्रेमपूर्वक करता है। तीमुथियुस शायद संकोची भी था, क्योंकि पौलुस उस में अधिक साहस और आत्मविश्वास भर देने का प्रयत्न करता है।

तीतुस का व्यक्तित्व, जो उस के नाम लिखी पत्री से प्रकट होता है, इस से भिन्न है। तीतुस की उम्र बड़ी थी, इसलिए उस का स्वभाव भी अधिक प्रौढ़ और

स्थिर था। हम इसे पौलुस द्वारा उसे सौंपे जानेवाले कामों से समझ सकते हैं। उदाहरण के लिए पौलुस ने कुरिन्थुस की समस्यापूर्ण कलीसिया को अपने हाथ से लिखी सुधार की पत्रियों को ले जाने का काम तीतुस को दिया। पौलुस ने तीतुस को क्रेते के द्वीप में रखा, जहाँ कलीसिया स्थापित करना और सेवकाई करना कठिन कार्य था। क्रेते के लोग बहुत वैर भावना से भरे, भयंकर लोग थे। उधर की सेवकाई की चुनौती का सामना करने को शायद तीतुस ही पौलुस के लिए सब से उत्तम व्यक्ति था।

पौलुस और तीमुथियुस के बीच बहुत घनिष्ट व्यक्तिगत संबंध था - सेवकाई में पिता-पुत्र संबंध। हम सोच सकते हैं जब पौलुस इफिसुस की तुरन्नुस की पाठशाला में पढ़ाता था, तब तीमुथियुस उस का विद्यार्थी था। परन्तु तीमुथियुस पहले पहल लुस्त्रा में ही प्रेरित पौलुस से मिला (प्रेरितों १६:१ देखिए)। जब पौलुस पर उस नगर में पत्थर फेंके गए और पौलुस को मरा समझकर छोड़ दिया गया था, तब शायद तीमुथियुस वहाँ था। कल्पना कीजिए कि जब पौलुस अद्‌भुत रीति से उस आक्रमण के बाद जिन्दा रहा, तब लड़के तीमुथियुस पर उस घटना का क्या प्रभाव हुआ होगा! मैं सोचता हूँ कि जब तीमुथियुस ने पौलुस की हिम्मत और आत्मिक शक्ति देखी, तब उस ने पौलुस को अपना नायक मान लिया। पौलुस ने अपनी तीसरी मिशनरी यात्रा के लिए तीमुथियुस को लुस्त्रा में चुन लिया; उस समय से तीमुथियुस का उल्लेख पौलुस के मिशनरी दल के अंग के रूप में किया गया है।

पंडितों का विचार है कि पौलुस ने तीमुथियुस के नाम पहली पत्री अपने रोमा कैद से छूटने के बाद लिखी। इस पत्री का उद्देश्य है तीमुथियुस को यह समझाना कि परमेश्वर ने अपनी कलीसिया का गठन जो सत्य का आधार-स्तंभ है, किस तरह के प्रवर्तन केलिए किया था। कलीसिया के क्रम-पालन की इस रूपरेखा में और तीतुस के नाम पत्री में पौलुस ने कलीसिया के अध्यक्षों और सेवकों के स्वभाव की श्रेष्ठता को महत्व दिया (१ तीमुथियुस ३:१-१३)।

कई लोग विश्वास करते हैं कि कलीसिया "आत्मा का उद्धार-स्थल" है। परन्तु, वास्तव में, कलीसिया आत्मा का उद्धार करने के कार्यों का केन्द्र है, जहाँ से आत्मिक कार्यों में सक्रिय कलीसिया के सदस्यों के द्वारा सुसमाचार की सच्चाई की घोषणा की जाती है। अगर स्थानीय कलीसिया सत्य का केन्द्र हो तो उस की सदस्यता के लिए विशेषकर उस की अगुआई के लिए निश्चित आत्मिक स्तर होने चाहिए।

जब आप इस पत्री का सर्वेक्षण करते हैं, तब आप कई दूसरे सत्यों का भी महत्त्व देख सकते हैं। इन्हें प्रेरित पौलुस की "विश्वासयोग्य उक्तियाँ" कहा जाता

है। जब पौलुस इन सेवकों को लिखता है, तब वह कभी कभी कहता है, "यह बात सच (विश्वासयोग्य) और हर प्रकार से मानने के योग्य है"। इस से उस का माना यह है कि, "मैं आप से अब एक सचमुच महत्त्वूर्ण बात कहने जा रहा हूँ।"

तीमुथियुस से पौलुस का पहला विश्वासयोग्य कथन है: मसीह यीशु पापियों का उद्धार करने के लिए जगत में आया, जिन में सब से बड़ा मैं हूँ" (१ तीमुथियुस १:१५)। यहाँ पौलुस कहता है कि यीशु ने पापियों को एक दृष्टांत देना चाहा। कभी कभी लोग सोचते हैं कि वे इतने बड़े पापी हैं कि उन का उद्धार नहीं हो सकता। ऐसे लोगों को पौलुस समझाता है कि "यीशु ने जगत के सब से बड़े पापी का उद्धार कर दिया। जब यीशु मसीह ने मेरा उद्धार किया, तब उस ने सब से बड़े पापी का उद्धार कर लिया। अगर वह मेरा अद्धार कर सकता है तो वह निश्चय ही आप का उद्धार करेगा।" पौलुस इधर यों ही अपने को नीचा नहीं दिखा रहा है; उस ने कलीसिया को पीड़ित किया; इसलिए उस ने अपने को सचमुच पापियों में प्रधान माना।

दूसरे अध्याय में जहाँ पौलुस तीमुथियुस से कहता है कि कलीसिया का दैनिक कार्यक्रम क्या होना चाहिए, वहाँ वह प्रार्थना करना कलीसिया का प्राथमिक कर्तव्य मानता है (१ तीमुथियुस २:१)। पौलुस आदेश देता है कि बिनती और प्रार्थना सब मनुष्यों के लिए की जाय; इस में वह एक विशेष प्रकार की प्रार्थना की ओर संकेत करता है। आप उसे "सुसमाचार-प्रचार की प्रार्थना" कह सकते हैं। वह सब मनुष्यों के लिए प्रार्थना है, क्योंकि परमेश्वर "यह चाहता है कि सब मनुष्यों का उद्धार हो (४)।

कलीसिया को वह आधार-स्तंभ होना चाहिए, जहाँ से सुसमाचार के सत्य का प्रचार किया जाय (१ तीमुथियुस ३:१५)। सुसमाचार के सत्य का प्रचार प्रार्थनापूर्वक करना चाहिए, क्योंकि पवित्र आत्मा ही लोगों का मनफिराव करके उन्हें मसीह के अनुयायी बना सकता है। पौलुस के विचार में कलीसिया में प्रार्थना मसीही सेवक की पहली प्राथमिकता है (२:१ देखिए)।

पवित्र और धर्मी निरीक्षक

तीमुथियुस को पौलुस की पहली पत्री और तीतुस के नाम पत्री सारी कलीसियाओं के लिए, कलीसिया के क्रम-नियम की पुस्तकें है। पौलुस ने इन सेवकाई-पत्रियों में कई व्यावहारिक बातों का आदेश स्थानीय परिस्थिति के अनुकूल दिया। उस ने स्थानीय संस्कृति के परे उठकर भी कई तत्त्वों का निर्देश दिया, जो कहीं भी, कलीसिया की सब पीढ़ियों में लागू हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, पौलुस के नीचे दिये हए शब्द आज की स्त्रियों को बहुत अप्रिय और अरुचिकर हैं। पौलुस लिखता है, "स्त्रियाँ भी संकोच और संयम के साथ सुहावने

वस्त्रों से अपने आप को संवारे; न कि बाल गूँथने और सोने और मोतियों और बहुमोल कपड़ों से, पर भले कामों से। क्योंकि परमेश्वर की भक्ति ग्रहण करनेवाली स्त्रियों को यही उचित भी है। और स्त्री को चुपचाप पूरी आधीनता से सीखना चाहिए। और मैं कहता हूँ कि स्त्री न उपदेश करे और न पुरुष पर आज्ञा चलाए, परन्तु चुपचाप रहे।" (१ तीमुथियुस २:९-१२)।

पौलुस यहाँ यह नहीं कहता कि स्त्रियाँ सेवकाई में भाग नहीं ले सकतीं। परन्तु वह अपनी सब पत्रियों में जो कहता आया, वही यहाँ भी कहता है। एक दिव्य क्रम है जिस में पुरुष घर का प्रधान है, मसीह पुरुष का स्वामी है, और पुरुष स्त्री का स्वामी है। इस का माना यह है कि जैसे मसीह कलीसिया की देखभाल और रखवाली करता है, वैसे एक पुरुष को अपनी पत्नी और परिवार की देखरेख और देखभाल करनी चाहिए और पुरुषों को स्थानीय कलीसिया का निरीक्षण और संरक्षण करना चाहिए।

बाइबल पुरुषों को घर और कलीसिया के अगुए होने की जिम्मेदारी सौंपती है। बाइबल परमेश्वर की दृष्टि में स्त्री-पुरुष की संपूर्ण तुल्यता का तत्त्व सिखाती है; परन्तु दोनों के कार्यों और भूमिकाओं की तुल्यता या समता नहीं मानती। बाइबल कहती है कि "परमेश्वर ने नर और नारी करके मनुष्यों की सृष्टि की" और दोनों को कुछ काम और उत्तरदायित्व सौंप दिए।

मेरी राय में, एक स्त्री अगर कलीसिया के बड़ों और अगुओं के अधिकार के अधीन होकर काम करती है तो वह स्थानीय कलीसिया के संदर्भ में सेवकाई का कोई भी काम कर सकती है। इसलिए, जिस प्रकार पुरुष बड़ों के निरीक्षण के अधीन सेवक या पास्टर होके काम करता है, वैसे एक स्त्री भी स्थानीय कलीसिया में बड़ों के निरीक्षण के अधीन पास्टर हो सकती है।

यह इन सेवकाई की पत्रियों में एक और मुख्य विषय की ओर हमें ले जाता है। १ तीमुथियुस में कलीसिया के कार्यकर्ताओं के गुण-विशेष, भूमिका और जिम्मेदारियों के बारे में निर्देश मिलते हैं। अध्यक्ष को परमेश्वर की भेडों की (कलीसिया के लोगों की) रखवाली करने और उन का निरीक्षण और संरक्षण करने की जिम्मेदारी है। कलीसिया का दूसरा कार्यकर्ता सेवक या "डीकन" है। वे सेवक हैं। वे आत्मिक रीति से सेवकाई के कई व्यावहारिक कार्यों में हाथ बंटाते हैं; परन्तु कलीसिया के शासन और निरीक्षण का भार उन का नहीं है। कलीसिया के इन दोनों प्रकार के कार्यकर्ताओं का परिचय हमें पहले "प्रेरितों" छठें परिच्छेद में कराया गया है।

कलीसिया के नियम-पालन से संबंधित पुस्तकों में भी, जो १ तीमुथियुस और तीतुस हैं, इन कार्यकर्ताओं का उल्लेख मिलता है। इन की योग्यताओं को

भी बताया गया है। आजकल कलीसिया के कमज़ोर होने का एक कारण यह है कि हम ने कलीसिया की सदस्यता के लिए और कलीसिया के कार्यकर्ताओं के लिए योग्यताओं के उचित स्तरों को निश्चित करना बहुत पहले छोड़ दिया था। किसी भी पीढ़ी में कलीसिया के सुसमाचार का प्रचार करने का मुख्य मार्ग अपने अगुओं और सदस्यों के जीवन से होता है। अगर आप एक स्थानीय कलीसिया के अध्यक्ष हैं तो आप पौलुस की इन सेवकाई की पत्रियों में अध्यक्षों के लिए निश्चित किए गए नियम और योग्यताओं के जो स्तर हैं, उन्हें प्रार्थनापूर्वक ध्यान से पढ़िए; फिर परमेश्वर से प्रार्थना कीजिए कि वह आप को अध्यक्षता के उन स्तरों तक पहुँचने की कृपा दे।

पौलुस इस तत्त्व पर ज़ोर देता है कि अध्यक्ष आत्मिक प्रौढ़ता और आत्मिक योग्यताओं से युक्त अगुवे हों। अकसर एक योग्यता का ठीक अर्थ नहीं समझा जाता, वह है, "एक ही पत्नी का पति होना" (३:२)। वह आदमी जिस की एक ही पत्नी हो। मूल भाषा में यह वाक्य पढ़ने पर मुझे लगता है इस का अर्थ यह नहीं कि पहले इस आदमी के कोई पत्नी नहीं होनी चाहिए। उस का माना यही है कि वह उस समय एक ही पत्नी के साथ रहता है।

अध्यक्षों के लिए जो ऊँचे स्तर की योग्यताएँ दी गयी हैं, उतने ही ऊँचे हैं डीकनों के भी। उन आत्मिक अगुओं की पत्नियों के लिए भी निश्चित की हुई योग्यताएँ कड़ी हैं। १ तीमुथियुस और तीतुस की पुस्तकों में इसे बहुत महत्त्व दिया गया है।

इस पत्री में पौलुस तीमुथियुस को "विश्वास से बहकने" के बारे में सावधान कर रहा है, जिस का माना यह है, "आप ने जिस पर पहले विश्वास किया, उस से दूर हो जाना"। पौलुस भविष्यद्वाणी करता है कि अंतिम दिनों में विश्वास से बहकने का पाप बहुत होगा। यह बहकना दो तरह का होता है - "भरमानेवाली आत्माओं" और "दुष्टात्माओं की शिक्षाओं" पर मन लगा कर (१ तीमुथियुस ४:१)।

"भरमानेवाली आत्माएँ" माने पवित्र आत्मा से संबंध न होनेवाली आत्माएँ। कई लोग इन दोनों में फरक नहीं समझते। वे आत्मिक क्षेत्र से संबंधित सब तरह की आत्माओं पर विश्वास करते हैं और यह नहीं समझते कि ऐसी आत्माएँ हैं जो लोगों को मसीह में होनेवाले उन के विश्वास से भरमाते और बहकाते हैं।

दूसरे प्रकार के विश्वास से बहकने को पौलुस "दुष्टात्माओं की शिक्षाएँ" कहता है। हमें परमेश्वर के वचन को ही कलीसिया में सिखाने और उपदेश करने का सिद्धान्त मानना चाहिए। परन्तु कई झूठे सिद्धान्त हैं, जो "दुष्टात्माओं की शिक्षाएँ हैं। ये तत्व बाइबल के नहीं होते और वे परमेश्वर से भी नहीं होते। वे

शैतान से आते हैं और इन झूठे सिद्धांतों से, जो बाइबल में नहीं होते, कई लोगों ने धोखा खाया है। परमेश्वर के लोगों को अपने विश्वास को उन सिद्धान्तों पर स्थिर नहीं करना है, जो बाइबल के नहीं होते।

लगता है तीमुथियुस जब अध्यक्ष नियुक्त किया गया तब उस को एक अद्‌भुत अनुभव हुआ था। यहाँ यह अर्थ मिलता है कि जब "प्राचीनों" ने तीमुथियुस पर अपने हाथ रखे, तब उसे कुछ वरदान दिया गया था। पौलुस के लिखने का सार है, "जब तुम्हारी नियुक्ति हुई, तब तुम में जो हुआ, उस के लिए अपनी सारी शक्ति और प्रयत्न दे दो।" फिर पौलुस उसी आत्मिक अनुभव के बारे में लिखता है, "पढ़ने, उपदेश देने और सिखाने में ध्यान दो" (१३-१६)।

मसीह का "शरीर" होनेवाली कलीसिया के लोगों के साथ तीमुथियुस को कैसा संबंध रखना है, उस के बारे में भी पौलुस उसे समझाता है। ऐसा मालूम नहीं पड़ता कि पौलुस तीमुथियुस से अपने लोगों के साथ औद्योगिक या व्यावसायिक संबंध रखने को कहता है। इस के विरुद्ध, वह कहता है कि तीमुथियुस को उन से अपने कुटुंब के सगे व्यक्तियों का-सा संबंध रखना है (१ तीमुथियुस ५:१-२)। यह एक काम-काज का संबंध नहीं है, परन्तु एक ही परिवार में आपस के प्रेम और घनिष्टता का संबंध है।

पौलुस तीमुथियुस को निर्देश देता है कि वह प्राचीनों या प्रिसबुतिरों के पद के लिए योग्यता के उच्च स्तर रखने को महत्व दे। अगर एक 'प्राचीन' पाप करे (वे अवश्य करते भी हैं), उन्हें सब के सामने समझाना चाहिए, क्योंकि उन की सेवकाई भी जनता के बीच की है। पौलुस तीमुथियुस को सावधान करता है कि कलीसिया के अनुशासन के संबंध में उसे पक्षपात नहीं करना है चाहे वह दोषी या निन्दायोग्य "प्राचीन" उस का मित्र हो। तीमुथियुस को पौलुस के लिखने का सार यह है कि "कलीसिया के कार्यकर्ताओं की नियुक्ति को एक गंभीर जिम्मेदारी मानो। "प्राचीन" या प्रिसबुतिर के पद पर किसी को नियुक्त करने के पहले देर तक प्रार्थना करो, तब बाद में तुम्हें दुखी नहीं होना पड़ेगा" (१ तीमुथियुस ५:१७-२५)।

पौलुस की मुख्य चिंता यह थी कि कलीसिया के अगुओं का स्वभाव उत्कृष्ट होवे, परन्तु अध्याय ६ में वह दूसरे उपदेश भी देता है। उदाहरण के लिए, पौलुस तीमुथियुस को गुलामों के बारे में कुछ व्यावहारिक उपदेश देता है। वह तीमुथियुस से कहता है कि वह दासों या गुलामों को निर्देश दे कि वे अपने स्वामियों का आदर करें, जिस से "परमेश्वर के नाम और उपदेश की निन्दा न हो" (१)। पौलुस अपनी यथार्थवादी बुद्धि से जानता था कि गुलामी की सामाजिक समस्या हटने वाली नहीं थी। कई आरंभिक विश्वासी गुलाम थे। चूँकि इस संसार में

गुलामी की समस्या का हल अब भी नहीं हुआ है, पौलुस उन्हें दिखाता है कि उस दासता की हालत में कैसे रहना है। इस अध्याय में कमाई और भक्ति के संबंध में एक उल्लेखनीय भाग है। हमारी संस्कृति में कमाई और लाभ पाने को बहुत प्राधान्य दिया जाता है। एक बच्चा जिस दिन से स्कूल जाता है, उस दिन से उसे सिखाया जाता है कि सफलतापूर्वक प्रयत्न करने में ही उस की योग्यता और मूल्य निर्भर है। परन्तु बड़े होने के बाद यही शिक्षा उसे संतोष नहीं देती। कई ऐसे लोग हैं, जो अपने काम-धंधे में बहुत सफल हुए हैं, परन्तु इन सफलताओं के बावजूद वे मन की शांति, संतृप्ति या आनन्द नहीं पाते। मेरे विचार में ऐसे लोग पौलुस के ये शब्द सुनना चाहेंगे कि "सन्तोष सहित भक्ति बड़ी कमाई है।" (६)

फिर पौलुस भौतिकता की हानियों के बारे में चेतावनी देता है। वह कहता है कि "जो धनी होना चाहते हैं, वे ऐसी परीक्षा और फंदे और बहुतेरे व्यर्थ और हानिकारक लालसाओं में फँसते हैं, जो मनुष्यों को बिगाड़ देती हैं और विनाश के समुद्र में डुबा देती हैं। क्योंकि रुपए का लोभ सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है।"

पौलुस तीमुथियुस को उपदेश देता है कि वह इन भोतिक वस्तुओं की लालसा से भागे और धार्मिकता का मार्ग ले (११)।

फिर पौलुस तीमुथियुस को दृढ़ता से उपदेश देता है, जिस की आज्ञा वह धनवानों को दे: "वे अभिमानी न हों और चंचल धन पर आशा न रखें, परन्तु परमेश्वर पर जो हमारे सुख के लिए सब कुछ बहुताएत से देता है" (१७)।

बाइबल यह नहीं कहती कि धनी होना गलत है। बाइबल के कई धार्मिक पुरुष धनी थे, उन में इब्राहीम, अय्यूब और राजा दाऊद भी आते हैं। परन्तु धन कमाने के पीछे जो प्रेरणा है और धन की ओर जो प्रवृत्ति है ये दोनों ही महत्त्वपूर्ण बातें हैं। धनी लोगों को अपने धन का उपयोग श्रेष्ठ कार्यों के लिए करना है और सदा ज़रूरतमन्दों की मदद के लिए उन्हें देना है। पौलुस उसे अनंत जीवन के लिए सुरक्षित निवेश या कमाई मानता है।

पौलुस तीमुथियुस को और हमें चुनौती देता है कि हम "भक्ति के लिए साधना करें", क्योंकि "भक्ति इस समय के लिए और आनेवाले जीवन के लिए भी लाभदायक है" (१ तीमुथियुस ४:८)। क्या आप के जीवन में ऐसी साधना होती है, जिस से आप के जीवन में धार्मिकता बढ़ती जाय। हमारी संस्कृति कमाई का पीछा करने को कहती है। पौलुस हमें धार्मिकता और भक्ति का पीछा करने को कहता है। क्या आप भौतिक लाभ का पीछा करते हैं या भक्ति का?

अध्याय ८

तीतुस के नाम पौलुस की पत्री

तीतुस के नाम पौलुस की पत्री में प्रधान तत्त्व यह है कि धर्म पूर्वक निरीक्षण और देखभाल के लिए धर्मी निरीक्षकों की ज़रूरत है। पौलुस का कथन है कि "क्रेते में तुम्हें कलीसिया स्थापित करने का एक ही मार्ग है, वह है, अपने पवित्र जीवन से परमेश्वर के सत्य को सुन्दरता से सजाने वाले धर्मी निरीक्षकों का होना"। "धार्मिकता से सत्य को अलंकृत करना" तीतुस के नाम पौलुस की पत्री का विषय है, जो एक सेवक को मुश्किल जगह पर कलीसिया स्थापित करने के लिए आवश्यक निर्देशों की पुस्तिका है।

पौलुस तीतुस से कहता है, "मैं इसलिए तुझे क्रेते में छोड़ आया था कि तू शेष रही हुई बातों को सुधारे, और मेरी आज्ञा के अनुसार नगर-प्राचीनों को नियुक्त करें" (१:५)। पौलुस की समस्या को सुलझाने वाले तीतुस को निर्देश दिया गया कि वह कलीसिया की गल्तियाँ सुधारे। ऐसा मालूम पड़ता है कि क्रेते की कलीसिया की समस्याएँ गलतिया की कलीसिया की समस्याओं के समान थीं, जिन का पौलुस ने सामना किया था। पुरानपंथी यहूदी मसीही क्रेते के विश्वासियों को सिखा रहे थे कि यीशु के सच्चे चेले होने के लिए उन्हें ख़तना करना है। दूसरे कई लोग क्रेते के विश्वासियों से धन वसूल करने को उन्हें पढ़ा रहे थे। पौलुस चाहता था कि तीतुस इन दो प्रश्नों का हल करे।

सेवकाई की इस पत्री का सब से मुख्य भाग मसीह के द्वारा इस दुनिया में परमेश्वर के तीन प्रकटन या अभिव्यक्ति का वर्णन है। यह नए नियम के सुसमाचार के सुन्दर वर्णनों में एक है; देखिए कि आप नीचे दिये हुए प्रकरण

में उन का पता लगा सकते हैं कि नहीं: "क्योंकि परमेश्वर का वह अनुग्रह प्रकट है, जो सब मनुष्यों के उद्धार का कारण है। और हमें चिताता है कि हम अभक्ति और सांसारिक अभिलाषाओं से मन फेरकर इस युग में संयम, धर्म और भक्ति से जीवन बिताएँ। और उस धन्य आशा की, अर्थात् अपने महान परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की महिमा के प्रकट होने की बाट जोहते रहें। जिस ने अपने आप को हमारे लिए दे दिया, कि हमें हर प्रकार के अधर्म से छुड़ा ले और शुद्ध करके अपने लिए एक ऐसी जाति बना ले जो भले भले कामों में सरगर्म हो। पूरे अधिकार के साथ ये बातें कह और समझा और सिखाता रह: कोई तुझे तुच्छ न जानने पाए" (२:११-१५)।

तीन प्रकटनों की कलीसिया

क्या आप ने प्रकटन की कलीसिया के नाम की एक कलीसिया के बारे में सुना है? "प्रकटन" शब्द 'प्रकट होना' या प्रत्यक्ष होने के अर्थ में प्रयुक्त यूनानी शब्द से आता है। पौलुस ने तीतुस के नाम पत्री में जिस कलीसिया की रूपरेखा प्रस्तुत की, उसे "दो प्रकटनों की कलीसिया" का नाम दिया जा सकता है, क्योंकि पौलुस तीतुस को परमेश्वर के दो बार प्रकट होने के बारे में कहता है। उस का कहना है कि कलीसिया की रूपरेखा ऐसी खींची गई है कि वह इन दो प्रकटनों के बीच रहती है। पौलुस लिखता है, "परमेश्वर का वह अनुग्रह प्रकट है जो सब मनुष्यों के उद्धार का कारण है" (तीतुस २:११)।

यह अनुग्रह बैतलहम में यीशु मसीह के जन्म के समय प्रकट हुआ। वह फिर मसीह की वापसी के समय प्रकट होगा। कलीसिया मसीह के द्वारा परमेश्वर के दो बार प्रकट होने के बीच रहती है। इस पत्री में परमेश्वर पौलुस को प्रकाशित कर देता है कि वह इन दो बार के प्रकट होने के बीच अपनी कलीसिया को निश्चित रूप से कैसे रहने की इच्छा करता है। इस युग में हमें "संयम, भक्ति और धर्म से" जीवन बिताना है (तीतुस २:१२)।

पौलुस कहता है कि मसीह के पहले प्रत्यक्ष होने से वह हमें उद्धार लाया। परमेश्वर ने हमें अधर्म से छुड़ाया, ताकि वह हमें शुद्ध करके अपने लिए एक ऐसी जाति बना ले, जो भले भले कामों में सरगर्म हो (१४)। "ऐसी एक विशेष जाति" के लोग जो मसीह के स्वरूप के अनुसार ढल जाएँगे।

अब आप देख सकते हैं कि क्यों मैंने कहा कि तीतुस के नाम पौलुस की पत्री का अच्छा शीर्षक होगा "तीन प्रकटनों की कलीसिया"। मसीह के पहले प्रकट होने और दुबारा आने के बीच एक तीसरी अभिव्यक्ति है - हमारे द्वारा परमेश्वर का प्रकट होना। परमेश्वर ने हमें उस का काम करने के लिए चुना है। हमें उस के "विशेष जन" होने चाहिए। हमें जगत के सामने यीशु जैसा होना है। हमें वह ज़रिया होना है, जिन के द्वारा पुनरुज्जीवित मसीह इस जगत में प्रकट होता है।

तीतुस के नाम पत्री में पौलुस इस बात को प्राधान्य देता है कि मसीह की कलीसिया के अंग होनेवाले विशेष लोग अपने पवित्र और धर्मी जीवन से "मसीह के सत्य को सुन्दरता से सजावे", ताकि परमेश्वर हमारे द्वारा इस जगत में प्रकट होवे। हम निश्चित जानते हैं कि हमारे जीवन के लिए परमेश्वर को बड़ी योजनाएँ हैं, क्योंकि उस ने हमें अपने विशेष और भले लोगों में अंग करके चुना है, जिन के द्वारा वह इस जगत में प्रकट होता है।

अध्याय ९

फिलेमोन के नाम पौलुस की पत्री

पौलुस ने कारागृह से पाँच पत्रियाँ जो लिखीं, उन में चौथी है "फिलेमोन"। हालांकि यह पौलुस की सब से छोटी पत्री है, तो भी यह पत्री प्रयोग में, विशेषकर सामाजिक कार्यक्षेत्र में बहुत बड़ी है।

फिलेमोन कुलुस्से का निवासी था और वह एक धनी, अन्यजाति का मसीही विश्वासी भी था। उस के दास का नाम था उनेसिमुस। "उनेसिमुस" नाम का अर्थ है "लाभदायक" या "उपयोगी"। शायद उसे यह नाम दिया गया था, क्योंकि वह एक मूल्यवान गुलाम था।

उनेसिमुस अपने मालिक फिलेमोन से कुछ पैसे चुराकर भाग गया। इस तरह वह भाग जानेवाला गुलाम और एक चोर बना। परन्तु रोमा नगर में उनेसिमुस की मुलाकात पौलुस से कारागृह में हुई और पौलुस ने उस में मसीह के प्रति विश्वास जगाया। नया जन्म लेने को मनफिराव की बड़ी ज़रूरत है और उनेसिमुस के लिए मनफिराव का माना यह होगा कि अपने मालिक के पास वापस जाना और भाग निकलने वाला गुलाम होने का दण्ड भोगना। पौलुस ने उनेसिमुस से यह कहा होगा। परन्तु उस ने यह भी कहा कि वह उसे फिलेमोन के पास वापस भेजते समय, फिलेमोन के नाम एक चिट्ठी भी लिख भेजेगा, जिस में वह फिलेमोन से प्रार्थना करेगा कि वह मसीह में अपने नए भाई के प्रति दया दिखावे।

फिलेमोन के नाम पौलुस की पत्री वह चिट्ठी है, जिसे उनेसिमुस अपने मालिक के पास वापस जाते समय हाथ में लेकर गया। वह सामाजिक प्रयोग की दृष्टि से मूल्यवान है, और मामला तय करने की कुशलता का बहुत उत्तम नमूना और उत्कृष्ट कृति है। जब हम यह पत्री लिखने में पौलुस का उद्देश्य जानते हैं,

तब हमें पता लगता है कि अपने उद्देश्य को पूरा करने को वह कितनी कुशलता से प्रयत्न करता है। वह फिलेमोन की मसीह की-सी आत्मा से प्रार्थना करता है और इस पर आशा और विश्वास प्रकट करता है कि फिलेमोन उनेसिमुस को ख़ुशी से वापस लेगा।

इस पत्री में मुख्य बात यह है कि पौलुस फिलेमोन से और हम से कहता है कि यीशु मसीह मनुष्यों के मन को परिवर्तित करता है। जब वह ऐसा करता है तब वह उन के परस्पर संबंधों को भी बदलता है। इसलिए पौलुस फिलेमोन को लिखता है, "मैं चाहता हूँ कि तू उनेसिमुस को क्षमा करे और उसे फिर स्वीकार करे, एक भाग निकलने वाले दास के समान और दण्ड के योग्य चोर के समान नहीं, परन्तु भाई के समान और मसीह में सहभागी के समान स्वीकार करे"। उस काल में भाग निकलने वाले गुलाम को मृत्युदण्ड दिया जाता था।

क्या यीशु मसीह ने आप को परिवर्तित कर दिया है? क्या उस ने आप के सब आपसी संबंधों को बदल दिया है? क्या आप को विश्वास है कि वह ऐसा कर सकता है और करेगा? यीशु मसीह ही ऐसा एक व्यक्ति है, जो हमें और हमारे संबंधों को बदल सकता है, क्योंकि सिर्फ़ यीशु मसीह लोगों में हृदय-परिवर्तन ला सकता है।

जब हम यह पत्री पढ़ते हैं, तब हम दूसरे प्रकार के प्रयोग भी उस में समझ सकते हैं। कई लोग सोचते हैं कि फिलेमोन के नाम पौलुस की पत्री प्रतीकों से भरपूर है। उदाहरण के लिए, उन का विचार है कि उनेसिमुस की वापसी और उसे दी हुई क्षमा प्रतीकात्मक रीति से हमारे पाप से छुटकारे और उद्धार का चित्रण करती है। छुटकारा देने का अर्थ है, उस के लिए जो कुछ चुकाना है, चुकाकर उसे वापस लेना। क्रूस पर यीशु मसीह ने जो लोहू बहाया, वह हमें अपने पास वापस लाने और अपनी इच्छा के अनुकूल हमारे जीवन को ढालने का मूल्य चुकाना था।

इस छोटी पत्री में हमारे बच्चों के जीवन के बदलाव का भी एक चित्र है। पौलुस ने फिलेमोन को लिखा कि उनेसिमुस तुझ से कुछ दिन तक के लिए इसी कारण अलग हुआ कि सदैव तेरे निकट रहे (१५)। कभी कभी हम माता-पिता कुछ समय के लिए अपने बच्चों को खो देते हैं। अगर हम उन्हें "उसी मार्ग की शिक्षा दें, जिस में उन को चलना चाहिए" (नीतिवचन २२:६), तो भी अपने जीवन को स्थिर करने के पहले, वे कुछ गलत मार्ग ले सकते हैं। परन्तु फिर वे

हमारे पास लौट आते हैं, वे अपने आप एक दृढ़ विश्वास और अनुभव में पहुँचते हैं और फिर हम उन्हें जीवन-भर के लिए वापस पाते हैं।

कुछ लोग मानते हैं कि यह पत्री दूसरे के बदले या दूसरे के लिए प्रायश्चित्त होने" का दृष्टांत है। पौलुस फिलेमोन को लिखता है, "यदि उस ने तेरी कुछ हानि की है या उस पर तेरा कुछ आता है, तो मेरे नाम पर लिख ले" (फिलेमोन १:१८)।

लोग ऐसा मानते हैं कि यह हमारे लिए यीशु मसीह से किये गए काम का चित्र है। जब यीशु मसीह हमारे पापों के लिए क्रूस पर मरा, तब उस ने अपने पिता से जो कहा, उस का सार है, "उन्हें तुझे जो कुछ चुकाना है, वह मेरे नाम लिख ले। मैं उसे पूरी तरह चुका दूँगा।"

आप देख सकते हैं कि फिलेमोन के नाम पत्री इस तरह के कई प्रयोगों से भरपूर है।

इस छोटी पत्री में हमें एक और विचार भी देखने को है। जब पौलुस फिलेमोन को लिखता है कि "मेरा कर्ज़ जो तुझ पर है वह तू ही है" (१९)। "तू" का अर्थ है "तेरा व्यक्तित्व, किसी व्यक्ति का अतुल्य गुण, जो उसे ख़ास व्यक्तित्व देता है।" पौलुस फिलेमोन को लिखता है कि नया जन्म लेने के बिना हम वास्तव में वह अनुपम व्यक्ति नहीं बन सकते। फिलेमोन नया जन्मा था। इसलिए पौलुस उस से कहता है, "मेरा कर्ज जो तुझपर है वह तू ही है। नया जन्म लिये बिना तू एक अनुपम या विशेष व्यक्ति नहीं बन सकता था। तेरे नए जन्म का कारण मैं ही था, इसलिए तुझ पर मेरा कर्ज़ है।"

कई लोग इसलिए निराश, लक्ष्यहीन और नाख़ुश रहते हैं, क्योंकि परमेश्वर ने उन के जो होने की इच्छा की, वे ऐसे नहीं बने। फिलेमोन को पौलुस की पत्री हमें सन्देश देती है कि जब तक हम यीशु मसीह पर विश्वास नहीं रखें तब तक हम अपने लिए परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करने वाले व्यक्ति होकर नहीं रह सकेंगे।

अध्याय १०

तीमुथियुस के नाम पौलुस की दूसरी पत्री

तीमुथियुस के नाम पौलुस की दूसरी पत्री प्रेरित पौलुस का अंतिम वसीयतनामा है। कलीसिया का इतिहास कहता है कि रोम में पहली बार की कैद से छूटने के बाद पौलुस ने इस्पानिया में सुसमाचार-प्रचार का काम किया और फिर इफिसुस को वापस आया। इफिसुस से वह त्रोआस में गया; जब रोमा सम्राट नीरो ने रोमा नगर को जलाया और उस का दोष यीशु मसीह के चेलों पर डाला, तब वह त्रोआस में था। जब यह हुआ तब रोमा साम्राज्य के सब मसीही विश्वासियों को कानून से प्रतिबंधित या देश-निकाले माने गये और उन से रोमा सरकार द्वारा ही नहीं परन्तु रोमा के सब नागरिकों द्वारा भी अवर्णनीय क्रूरता से व्यवहार किया गया। पतरस और पौलुस सब के दुश्मन माने गये और पौलुस जल्दी ही बन्दीगृह में डाला गया।

पौलुस को जिस तरह गिरफ़तार कर दिया था, उस से प्रकट होता है कि वह उस गिरफ्तारी और कैद के बाद जिन्दा नहीं रह पाएगा (२ तीमुथियुस १:४)। जब पौलुस तीमुथियुस को यह पत्री लिखता है, तब वह जानता है कि वह जल्दी ही मारा जाएगा। इस कारण महान प्रेरित पौलुस के ये अंतिम शब्द बहुत गंभीर हैं।

अगर आप आज रोम के मामरटाइन कारागृह देखने जाएँगे, तो आपको इस पत्री के हर शब्द की गंभीरता समझ में आएगी। बन्दीगृह के नीचे के तहखाने में एक कालकोठरी है, जहाँ माना जाता है कि रोमियों ने प्रेरित पौलुस को बन्दी करके रखा था। उसे बांध रखने की रीति लगातार पीड़ा और यातना देनेवाली थी। वह कालकोठरी दुर्गन्धपूर्ण और कैद करने की बहुत भयानक जगह थी। वह जगह रोम के सब से निन्दित कैदियों के लिए अलग रखी हुई थी।

यह समझ में नहीं आनेवाली बात है कि इन कठिन परिस्थितियों में पौलुस कैसे तीमुथियुस को अपनी दूसरी पत्री लिख्र सका और उसे कारागृह के बाहर भेज सका। ऐसा लगता है कि उनेसिफुरुस नामक एक वृद्ध और पौलुस का प्रिय डाक्टर लूका के अलावा बाकी सब ने उसे छोड़ दिया था। शायद इन दोनों में कोई एक यह पत्री लेकर बाहर गया होगा। पौलुस ने अवश्य अपने हाथ से उसे नहीं लिख्रा होगा; उस ने किसी से यह लिख्रवाया होगा।

जब आप पौलुस के ये अंतिम शब्द पढ़ते हैं तब उस भयंकर बन्दीगृह की हालत को मत भूलिए, जहाँ बन्दी पौलुस के हृदय से ये शब्द निकले:

"इसी कारण मैं तुझे सुधि दिलाता हूँ कि तू परमेश्वर के उस वरदान को जो मेरे हाथ रख्रने के द्वारा तुझे मिला है, चमका दे। क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं, पर सामर्थ, प्रेम और संयम की आत्मा दी है" (२ तीमुथियुस १:६-७)।

आप इन शब्दों में से निकलनेवाली पौलुस के स्वभाव की रूपरेख्रा देख्र सकते हैं। तीमुथियुस शायद एक लज्जाशील और डरपोक जैसा व्यक्ति था, जिसे लोगों के साथ संपर्क करने में समस्या रही होगी। पौलुस के शब्दों से मालूम पड़ता है कि अध्यक्ष-पद पर तीमुथियुस की नियुक्ति के समय जब पौलुस ने उस पर हाथ रख्रे, तब एक अद्‌भुत बात हुई थी। पौलुस लिख्रता है, "अगर तुम अपनी आंतरिक सामर्थ को जगा दो तो तुम्हें हमारे प्रभु के बारे में दूसरों से कहने का भय नहीं होगा। तुम यह कहने से भी नहीं डरोगे कि तुम मेरे दोस्त हो, जो मसीह के लिए इधर बन्दीगृह में हूँ।"

दूसरे अध्याय में हमें कुछ दृष्टांत मिलते हैं, जो इस विषय पर प्रकाश डालते हैं कि मसीह के साथ सच्चे संबंध का अर्थ क्या है। वाक्य ४ से ७ तक के भाग में पौलुस एक योद्धा, कुश्ती लड़नेवाले और किसान का दृष्टांत देता है।

पौलुस योद्धा के दृष्टांत की व्याख्या करता है कि जब एक योद्धा लड़ाई पर जाता है, वह अपने आप को संसार की बातों में और मनोरंजन में नहीं फँसाता। उस का सारा ध्यान लड़ाई जीतने पर होता है। इस तरह पौलुस तीमुथियुस को प्रोत्साहन देता है कि वह यीशु मसीह के लिए लड़ाई लड़ने में पूरा तन-मन लगा दे।

फिर पौलुस कुश्ती लड़नेवाले का दृष्टांत देकर कहता है, "अख्राड़े में लड़नेवाला यदि नियम के अनुसार न लड़े तो मुकुट नहीं पाता" (१ तीमुथियुस

२:५)। मसीह में जीने के भी नियम होते हैं; उन में एक है, यीशु मसीह के लिए कष्ट झेलना। तुम्हें अपना क्रूस उठाकर उस का पीछा करने में ख़ुश होना है।

किसान के बारे में पौलुस इस बात की ओर इशारा करता है कि बोने और काटने के दोनों कालों में किसान काठिन प्रयत्न करता है। फिर वही "फल का पहला अंश पाता है" (६)। पौलुस तीमुथियुस को उपदेश देता है कि "जैसे किसान काम करता है, वैसे कठिन परिश्रम करो। बोते समय और काटते समय कठिन परिश्रम करो तो तुम्हें अच्छी फसल मिलेगी।"

पौलुस को अपने कष्टों में भी मसीह के उस के साथ होने का विश्वास था। जब हम इतने कमज़ोर होते हैं कि हम में विश्वास ही नष्ट होता है, तब भी परमेश्वर हमारी ओर विश्वासयोग्य रहता है और हमारी मदद करता है, क्योंकि वह हमें, जो उस के अंग हैं, इनकार नहीं कर सकता। परमेश्वर का सत्य एक बड़ी चट्टान के जैसे दृढ़ रहता है और कुछ भी उसे हिला नहीं सकता। वह स्थिर नींव की चट्टान है, जिस पर खुदी हुई है, "परमेश्वर अपनों को पहचानता है" (१३,१९)।

जब आप पौलुस के ये आश्वासन के शब्द पढ़ते हैं, तब उस की कष्टदायक हालत का स्मरण करें। पौलुस लिखता है कि हम मानसिक, भावात्मक और आत्मिक रीति से इतने बीमार और कमज़ोर पड़ सकते हैं, कि हमें विश्वास करने और प्रार्थना करने की शक्ति नहीं होती। परन्तु क्या आप इस तरह की हालत में पड़ेंगे? नहीं। इस पत्री का यह भाग बताता है कि जब हम इतने कमज़ोर होते हैं कि प्रार्थना न कर सकने और विश्वास न करने की हालत में पड़ते हैं, तब भी परमेश्वर अपनों का इनकार नहीं करता। अगर हम अपना विश्वास स्थिर नहीं रख सकते, तो भी वह हमेशा हमारी ओर विश्वासयोग्य होता है।

पौलुस बरतनों का उदाहरण देकर विश्वासी के जीवन के उद्देश्य को सिखाता है (२०-२१)। उन दिनों में लोगों के घरों में बड़े बरतन या घड़े होते थे; उन में कुछ बरतन आदर के कामों के लिए और दूसरे कुछ बरतन अनादर के कामों के लिए प्रयुक्त थे।

पौलुस तीमुथियुस से कहता है कि "जब तुम मसीह का पीछा करते हो तब ऐसा ही होता है। तुम्हारा उपयोग अनादर के कार्यों के लिए हो सकता है अथवा तुम जवानी की उत्तेजक अभिलाषाओं से मुँह मोड़कर अपना ध्यान भलाई, विश्वास, प्रेम और शांति की ओर लगा सकते हो। ऐसा करेंगे तो तुम आदरपूर्वक

उद्देश्यों के लिए उपयुक्त बरतन होके रहोगे और अपने प्रभु के प्रयोजन के लिए शुद्ध और उपयोगी साधन बनोगे।"

इस पत्री में पौलुस द्वारा लिखे गए प्रधान वाक्यों में एक यह है कि "अपने आप को परमेश्वर के ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो" (२ तीमुथियुस २:१५)। इस वाक्य से पौलुस का माना यह है कि "तीमुथियुस, अनुशासन का पालन करो और ख़ूब प्रयत्न करो, ताकि परमेश्वर के वचन के अध्ययन के लिए समर्पणपूर्वक प्रयत्न करो, तो तुम किसी न किसी दिन परमेश्वर के लिए ग्रहणयोग्य बनोगे।" हमेशा अपनी जाँच करो कि परमेश्वर का वचन सीखने के प्रयत्न में तुम सचमुच लगे हो कि नहीं।

दूसरे परिच्छेद के अंत में पौलुस युवा सेवक तीमुथियुस को उपदेश देता है कि लोगों को उन की समस्याओं को सुलझाने में वह कैसे मदद दे सकता है। आज हम इसे परामर्श देने की सेवकाई कहते हैं। पौलुस और तीमुथियुस के ज़माने में उसे रखवाली करना या देखभाल करना कहलाया होगा। मुझे इस बात पर आश्चर्य होता है कि पौलुस के ये अंतिम शब्द, जो बहुत अधिक क्लेश की स्थिति में बोले हुए थे तीमुथियुस को अच्छा सेवक होने का कौशल सिखाने के उद्देश्य से बोले गए।

पौलुस तीमुथियुस को उपदेश देता है कि जिन लोगों को सलाह देने और सुधारने में वह लगा है उन की समस्या यह है कि वे अपने जीवन में परमेश्वर की अद्‌भुत योजना के विरुद्ध जीवन बिता रहे हैं। वे शैतान के फंदे में पड़े हैं (२६)। लोगों के ऐसे बरताव के कई कारण होते हैं। वे अपनी तुलना दूसरों से करते होंगे या वे दूसरों की नकल करते होंगे या अपने को दूसरों से नियंत्रित किए जाने को छोड़े होंगे। इस तरह हमारे "नष्ट होने" के कई मार्ग हैं। जो लोग अपने जीवन के लिए परमेश्वर की योजना का विरोध करते हैं, वे बहुत कठिन हालत में पड़ेंगे और जीवन में बहुत दुख सहेंगे।

पौलुस तीमुथियुस से कहता है, ''अगर तू नम्रता, कृपा और धीरज से उन लोगों की परेशानियाँ सुनेगा तो आत्मा के ये तीन फल परमेश्वर का द्वार खुला रखेंगे ओर तुम्हारी बातें सुनी जाएँगी। तब तू इन लोगों को निर्देश दे सकेगा और उन के सामने सत्य को रख सकेगा, जो उन्हें स्वतन्त्र करेगा" (यूहन्ना ८:३२ देखिए)। तुझे खुद इन लोगों के साथ पूरी तरह संघर्ष करने की ज़रूरत नहीं

क्योंकि वह परमेश्वर के लिए द्वार बन्द कर देता है और उन्हें शैतान के बंधन में फँसाता है। मेरे विचार में आत्मिक और सेवकाई के परामर्श के विषय पर लिखी हुई बातों में यह बहुत महत्त्वपूर्ण और सुन्दर तत्त्व है।

अपने ज्ञान की बातों से तू क्या करने जा रहा है?

इस पत्री का केन्द्र-बिन्दु वाक्य ३:१० से ४:५ तक का भाग है। पौलुस जानता था कि उसे जल्दी ही मृत्यु-दण्ड दिया जाएगा, शायद इस पत्री का उपदेश लिखवाकर उसे बाहर भेज देने के कुछ घटों या दिनों के बाद ही। जब पौलुस तीमुथियुस को यह अंतिम उपदेश देता है, तब के उस के शब्दों की गंभीरता को हमें महसूस करना चाहिए। वे उस के विश्वास, उस के दुख-दर्द और तीमुथियुस के प्रति उस के प्रेम के शब्द हैं, साथ साथ सुसमाचार के सत्य की घोषणा करने वाले शब्द भी हैं। पौलुस तीमुथियुस को उपदेश देते समय कई बार "तू जानता है... तू जानता है" कहता है। जो कुछ पौलुस कहता है कि तीमुथियुस जानता है, उन सब बातों को वह कैसे जानता होगा?

इस का स्पष्ट उत्तर यह है कि तीमुथियुस ने पौलुस के जीवन में ये सब बातें देख ली हैं, इसलिए वह उन्हें जानता है। पौलुस अब इस प्रश्न से तीमुथियुस को चुनौती देता है कि "अपने ज्ञान की बातों से तू क्या करने जा रहा है?"

पौलुस तीमुथियुस को यह अंतिम काम सौंपता है: "परमेश्वर और मसीह यीशु को गवाह करके, जो जीवतों और मरे हुओं का न्याय करेगा, उसे और उस के प्रकट होने और राज्य की सुधि दिलाकर मैं तुझे चिताता हूँ कि तू वचन को प्रचार कर; समय और असमय तैयार रह, सब प्रकार की सहनशीलता और शिक्षा के साथ उलाहना दे और डांट और समझा। क्योंकि ऐसा समय आएगा, कि लोग खरा उपदेश न सह सहेंगे पर अपनी अभिलाषाओं के अनुसार अपने लिए बहुतेरे उपदेशक बटोर लेंगे और अपने कान सत्य से फेरकर कथा कहानियों पर लगाएँगे। पर तू सब बातों में सावधान रह, दुख उठा, सुसमाचार-प्रचार का काम कर और अपनी सेवा को पूरा कर" (२ तीमुथियुस ४:१-५)।

ये शब्द हम सब को प्रभु के काम में सावधानी और विश्वासयोग्यता से लगने की चुनौती देते हैं और हमें यह निश्चय करने की चेतावनी देते हैं कि हम अपने ज्ञान की बातों से क्या करने जा रहे हैं। पौलुस और तीमुथियुस का संबंध पौलुस के इस अंतिम वसीयतनामे या इच्छापत्र का एक मुख्य प्रयोग भी है। अगर आप

विश्वास या सेवकाई में अभी प्रौढ़ नहीं हैं, तो आप को पौलुस के जैसे अनुभवी और प्रौढ़ अगुवे की बड़ी ज़रूरत है। अगर आप बहुत अनुभवी और प्रौढ़ विश्वासी या सेवक हैं और तब भी अगर आप तीमुथियुस के जैसे एक युवा विश्वासी या सेवक को प्रशिक्षण नहीं दे रहे हैं, तो आप अपने कर्तव्य से विमुख होने वाले हैं।

बूढ़े योद्धा के अंतिम शब्द

ऊपर दिए गए चुनौती के गंभीर शब्दों के बाद, तीमुथियुस के हृदय के सारे दुख को प्रकट कर देनेवाली ये बातें आती हैं; उस पौलुस की बातें जो कलीसिया के इतिहास में सब से महान सुसमाचार-प्रचारक, सेवक, शिक्षक, धर्म-शास्त्री और नए नियम का रचयिता है: "मैं इसलिए यह कहता हूँ कि मैं अधिक समय तक तेरी मदद करने को तेरे पास नहीं रहूँगा। मेरा जीवन समाप्त होने वाला है। बहुत शीघ्र मैं स्वर्ग जानेवाला हूँ। मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूँ; मैं ने अपनी दौड़ पूरी कर ली और इन सब में मैंने विश्वास की रखवाली की है। अब लड़ना ख़तम करके विश्राम लेने का समय आया है। स्वर्ग में मेरे लिए एक मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु, जो धर्मी और न्यायी है, मुझे उधर जाते वक्त देगा। केवल मुझे ही नहीं वरन् उन सब को भी, जो उस के फिर प्रकट होने का इन्तज़ार आतुरता से करते हैं" (II तीमुथियुस ४:६-८)।